TITLE CODE : UPHIN50246

राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक

लोक पहल

शाहजहाँपुर | शुक्रवार | 28 जुलाई 2023

शाहजहाँपुर से प्रकाशित

वर्ष :2 | अंक :22 | पृष्ठ :8 | मूल्य 2 रुपये

ईस्ट इंडिया की तर्ज पर बना है 'इंडिया' गठबंधन : मोदी

सीकर एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राजस्थान के सीकर में पहुंचे, यहां प्रधानमंत्री मोदी ने जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि आजादी का आंदोलन जब प्रखरता पर था तो महात्मा गांधी ने नारा दिया था। महात्मा गांधी ने जो नारा दिया था आज फिर से देश के कल्याण के लिए उसी नारे की जरूरत है। महात्मा गांधी का नारा था- अंग्रेजों भारत छोड़ो और अंग्रेजों को देश छोड़ना पड़ा था। जैसे गांधी जी ने भारत छोड़ो का नारा दिया था, वैसा आज का मंत्र है- भ्रष्टाचार छोड़ो इंडिया, परिवारवाद छोड़ो इंडिया, तुष्टिकरण छोड़ो इंडिया। यह क्विट इंडिया देश को बचाएगा। इस दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि कांग्रेस और उसकी जामत फ्रॉड कंपनियों की तर्ज पर काम कर रही है। ये लोग एक कांड करके नाम बदलकर दूसरे नाम से नया कांड करने की तैयारी कर रहे हैं। मोदी ने 'इंडिया' गठबंधन की तुलना इस्ट इंडिया कंपनी से की और कहा कि अगर, उन्हें इंडिया की चिंता होती तो विदेश जाकर भारत की निंदा नहीं करते। पीएम मोदी ने कहा कि राजस्थान में युवाओं के भविष्य से खिलवाड़ हो रहा है। राजस्थान में पेपर लीक उद्योग चल रहा है। यहां सत्ताधारी दल के लोगों पर पेपर लीक माफिया होने का आरोप है। युवाओं को पेपर लीक माफिया से बचाने के लिए कांग्रेस को हटाना होगा।

इस दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने देश के 9 करोड़ किसानों के खातों में किसान सम्मान निधि के रुपए जारी किए। इसी के साथ पीएम प्रणाम योजना और किसान समृद्धि केंद्र योजना की शुरुआत की। इस दौरान उन्होंने प्रदेश के पांच मेडिकल कॉलेज का उद्घाटन किया और सात का शिलान्यास किया। पीएम मोदी ने कहा कि राजस्थान के विकास के लिए केंद्र सरकार पैसे भेज रही है। जब केंद्र में कांग्रेस सरकार थी तक 10 साल में राजस्थान को टैक्स की हिस्सेदारी के रूप में 1 लाख करोड़ दिए गए थे। बीते 9 साल में भाजपा सरकार ने टैक्स हिस्सेदारी के रूप में राजस्थान को 4 लाख करोड़ रुपए से अधिक दिए हैं। मोदी ने कहा-जब से प्रदेश में कांग्रेस सरकार बनी है तब विकास काम में रोड़े अटकाने का काम चलता था।

कर्नाटक में पास, अब मध्य प्रदेश में कांग्रेस ने चला मुफ्त वाला दांव, किसानों को मुफ्त बिजली देने का वादा

भोपाल एजेंसी। मतदाताओं को रोजमर्रा की सुविधाओं को मुफ्त में देने की योजनाएं चुनाव में सभी दलों को लुभा रही है। चुनाव में इस तरीके की घोषणाएं न केवल राजनीतिक दलों को बढ़त दिला रहे हैं बल्कि मतदाताओं का एक बड़ा वर्ग उनके साथ जुड़ता दिखाई दे रहा है। अभी हाल ही में कर्नाटक में हुए विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने पांच बड़ी योजनाओं की घोषणा की थी जिसमें मुफ्त में राशन, बिजली, नगद सहायता आदि शामिल थी इसका कांग्रेस को बड़ा फायदा भी मिला और पार्टी ने भारी बहुमत से कर्नाटक में सरकार बनाई। अब मध्य प्रदेश में विधानसभा चुनाव करीब हैं, ऐसे में क्या कांग्रेस क्या बीजेपी, सभी प्रचार में लग गए हैं। बड़े-बड़े वादे कर जनता को रिझाने की भी पूरी कोशिश हो रही है। इसी कड़ी में कांग्रेस ने किसानों को मुफ्त बिजली का वादा कर दिया है। कहा गया है कि कृषक न्याय योजना के तहत किसानों को फ्री में बिजली दी जाएगी।

कांग्रेस नेता कमलनाथ ने एक प्रेस कांफ्रेंस में कहा कि हमने 27 लाख किसानों का कर्ज माफकिया था। अब जब फिर हम सरकार में आएंगे, इस योजना को जारी रखा जाएगा। इसके अलावा हम कृषक न्याय योजना शुरू करेंगे। अगर कोई भी किसान सिचाई के वक्त 5 हॉर्सपावर तक का पंप इस्तेमाल करेगा, उसे मुफ्त बिजली का पूरा फायदा होगा। ये भी कहा गया है कि किसानों को एक दिन में 12 घंटे लगातार बिना कटे बिजली दी जाएगी।

उन्होंने कहा कि अगर सरकार में आए तो किसानों पर दर्ज मामले वापस लिए जाएंगे। जोर देकर कहा गया कि जिन भी किसानों ने आवाज उठाई, जिन्होंने भी फर्जी बिलजी बिलों के खिलाफ विरोध किया, उन पर केस दर्ज किए गए। अगर कांग्रेस की सरकार आती है, उन सभी मामलों को वापस लिया जाएगा। इसके अलावा केंद्र का ही एक आंकड़ा जारी कर कमलनाथ ने कहा कि मध्य प्रदेश में किसानों की आय कम हो गई है। वैसे कर्नाटक की तरह मध्य प्रदेश में भी कांग्रेस भ्रष्टाचार का मुद्दा उठाने जा रही है। कमलनाथ ने कहा है कि राज्य में लंबे समय से कोई निवेश नहीं हुआ है। भ्रष्टाचार यहां पर सिस्टम का अटूट हिस्सा बन चुका है।

उप्र में लोगों को लगेगा करंट, महंगी होंगी बिजली

लोक पहल

लखनऊ। उत्तर प्रदेष के बिजली उपभोक्ताओं को महंगाई का करंट लग सकता है। सरकार जल्द ही बिजली के दामों में बढ़ोत्तरी करने जा रही है। सूत्रों के अनुसार बिजली के रेट 28 पैसे से लेकर 1.09 प्रति यूनिट के हिसाब से बढ़ाए जा सकते हैं। जिसके लिए प्रस्ताव भी तैयार कर लिया है।

जानकारी के मुताबिक उत्तर प्रदेश पावर कॉरपोरेशन अब उपभोक्ताओं पर फ्यूल सरचार्ज लगाने की तैयारी कर रहा है, जिसके लिए आयोग ने प्रस्ताव भेजा है। इसके तहत 28 पैसे से लेकर 1.09 रुपए प्रति यूनिट तक बिजली महंगी हो जाएगी। यूपी में पिछले चार साल से बिजली दर नहीं बढ़ी है। आयोग में कई बार प्रस्ताव खारिज हो चुका है। ऐसे में विभागीय घाटा कम करने के लिए यह प्रस्ताव दिया गया है। हालांकि इसका विरोध भी उप्र राज्य विद्युत उपभोक्ता परिषद ने शुरू कर दिया है। विभाग की तरफ से फ्यूल सरचार्ज लगाने की तैयारी चल रही है। घरेलू, कामर्षियल, इंडस्ट्री को लेकर अलग-अलग फ्यूल सरचार्ज लगाने की तैयारी है। अगर यह पास होता है तो 28 पैसे से लेकर 1.09 रुपये प्रति यूनिट बिजली महंगी हो जाएगी। इसमें उपभोक्ताओं से कुल 1437 करोड़ रुपए की वसूली की बात कही जा रही है। 61 पैसे प्रति यूनिट के आधार पर अलग-अलग औसत बिलिंग की दर पावर कॉरपोरेशन की तरफ से तैयार की गई है।

पांच लाख लोग जुटेंगे राम मन्दिर की प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव में

प्रधानमंत्री मोदी होंगे मुख्य यजमान

लोक पहल

अयोध्या। श्रीराम जन्मभूमि पर पांच सौ वर्षो से निरन्तर चली लड़ाई हजारों बलिदानों के बाद निर्मित हो रहे भव्य राम मन्दिर को लोकार्पित किये जाने की तैयारियां चल रही हैं। लोकार्पण की तैयारियां तेज होती जा रही हैं। भव्य गर्भगृह में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा का उत्सव जनवरी 2024 में किया जाना है। उत्सव को व्यापक स्वरूप देने की योजना पर काम चल रहा है। इसकी कमान राममंदिर ट्रस्ट के साथ संघ व विहिप ने संभाल रखी है। संघ का अनुमान है कि महोत्सव में करीब पांच लाख लोग अयोध्या आ सकते हैं।

संघ के पदाधिकारी लगातार बैठकें कर आयोजन की रूपरेखा तैयार कर रहे हैं। संघ की कोशिश है कि अयोध्या से कोई भी भूखा न जाए। पूरे शहर में जगह-जगह भंडारे के आयोजन की तैयारी हो रही है। संघ के सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार, रामलला का प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव 1 दिवसीय होगा। उत्सव का शुभारंभ मकर संक्रांति 15 जनवरी को होगा, समापन 24 जनवरी को होना है।

इसी बीच शुभ तिथि में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा की जानी है, इसके मुख्य यजमान पीएम नरेंद्र मोदी होंगे, उन्हें आमंत्रण भेजा चुका है। संघ का अनुमान है कि महोत्सव में शामिल होने के लिए अयोध्या में कम से कम पांच लाख भक्त आ सकते हैं। वैसे संघ लोगों से अपील कर रहा है कि अयोध्या आने के बजाय अपने-अपने क्षेत्र के मठ-मंदिरों में अनुष्ठान का आयोजन कर उत्सव मनाएं। फिर भी बड़ी संख्या में लोगों के आने की संभावना है।

प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव में अयोध्या आने वाले लोगों के रुकने के लिए मठ-मंदिरों के अलावा स्कूल-कालेजों में भी व्यवस्था की जा सकती है। जरूरत पड़ने पर स्थानीय प्रशासन के साथ संघ के कार्यकर्ता भी भक्तों की सुविधा के लिए कमान संभालेंगे। सूत्रों की मानें तो संघ ने योजना बनाई है कि लोकार्पण समारोह के दौरान प्रत्येक हिन्दू धर्म में यज्ञ, हवन, भण्डारे, भजन, रंगोली घरों में प्रकाष, नए वस्त्र पहनना, दान-पुण्य आदि किया जायेगा। संघ का कहना है कि जिसकी जितनी क्षमता हो वह उस हिसाब से इस उत्सव को मनाएं। इस उत्सव में कोई वर्ग ऐसा न रहे जो शामिल न हो सके। चाहें बच्चे हो, बुजुर्ग, जवान, स्त्री-पुरूष, कर्मचारी, व्यापारी, अधिकारी, अमीर-गरीब सभी को साथ में लेकर उत्सव मनाएं जाने की योजना पर काम चल रहा है। संघ का मानना है कि पांच सौ वर्षो तक चले धर्म युद्ध में हुतात्मा हो गए या श्रीराम मन्दिर निर्माण की प्रतीक्षा में दिवंगत हो चुके पुरखों की आत्माओं को शान्ति मिलेगी।

देश का पहला अंडरवाटर व्हीकल लॉन्च, निगरानी और जासूसी में करेगा मदद

कोलकाता एजेंसी। देश की समुद्री सुरक्षा को लेकर एक नया सिपहसालार मिल गया.. कोलकाता स्थित गार्डेन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स ने एक ऑटोनॉमस अंडरवाटर व्हीकल बनाया है। यह पानी के अंदर खुद से चलने वाली रोबोटिक पनडुब्बी है। इसकी लंबाई 2.1 मीटर और वजन 50 किलोग्राम है। यह लगातार तीन घंटे तक समुद्र में गोते लगा सकता है। यह 3 नॉट है यानी 5.56 किलोमीटर प्रतिघंटा की गति से समुद्र में गोते लगाता है। इसमें लगे जीपीएस सिस्टम के जरिए इससे संपर्क में रहा जा सकता है. साथ ही यह उसके सहारे समुद्र में रास्ता खोजता है।

जीआरएसई ने अपने ट्विटर हैंडल पर बताया कि पूरी तरह से स्वदेशी एयूवी को बंगाल की खाड़ी में उतारा गया। इसमें कई अत्याधुनिक तकनीकें लगाई गई हैं। ताकि समुद्र में दुश्मन किसी भी तरह की साजिश रचे तो पता चल जाए।

जीएसटी में ईडी की दखल का विरोध करेगा व्यापार मण्डल

लखनऊ में आयोजित प्रदेश कार्य समिति की बैठक में व्यापारियों की समस्याओं पर हुई चर्चा

लोक पहल

शाहजहांपुर। उद्योग व्यापार मण्डल की प्रदेश कार्यसमिति की बैठक लखनऊ में सम्पन्न हुई। जिसमें प्रदेश के विभिन्न जनपदों से आए करीब चार सौ व्यापारियों ने हिस्सा लिया। व्यापारियों को सम्बोधित करते हुए प्रांतीय अध्यक्ष मुकुंद मिश्रा ने कहा कि इस वर्ष व्यापार मण्डल स्वर्ण जयंती समारोह मना रहा है जिसके तहत एक व्यापारी स्वाभिमान यात्रा निकाली जा रही है। यह यात्रा फरवरी 223 में सहारनपुर से शुरू की गई थी लेकिन नगर निगम चुनाव के कारण इसे स्थगित कर दिया गया था। अब यह यात्रा पुन: 21 सितम्बर से बरेली से आरंभ होकर प्रदेश के करीब 40 जिलों में निकाली जाएगी। बैठक को सम्बोधित करते हुए प्रदेश महामंत्री राजन गुप्ता ने कहा कि सरकार ने

जुलाई 2017 में जीएसटी लागू करते समय कहा था कि छह महीने का ट्रायल रहेगा लेकिन अब धारा-61 के तहत व्यापारियों को नोटिस भेजकर परेशान किया जा रहा है इतना ही नहीं जीएसटी में ईडी का दखल तय किये जाने का प्रावधान बनाया जा रहा है ऐसा होने से व्यापारियों की कमर टूट जाएगी और वह किसी भी दशा में व्यापार नहीं कर सकेंगे। उन्होंने कहा कि उद्योग व्यापार मण्डल सरकार के इस फैसले का पुरजोर विरोध करता है। बैठक में शाहजहांपुर के जिलाध्यक्ष कुलदीप सिंह दुआ, जिलामहामंत्री नाजिम खां, नगर अध्यक्ष संजीव राठौर, रोहित अग्रवाल, शकील अहमद, धर्मपाल रैना सहित अन्य तमाम पदाधिकारी शामिल हुए।

बाल कल्याण समिति ने बालग्रह में किया पौधारोपण

लोक पहल

शाहजहांपुर। न्याय पीठ बाल कल्याण समिति ने राजकीय बालग्रह में पौधारोपण किया। पौधारोपण के उपरांत न्याय पीठ के सदस्य राम औतार त्रिपाठी ने कहा कि हम सब लोगों को अपने जीवन में अधिक से अधिक वृक्ष लगाने चाहिए और वृक्ष लगाने के साथ-साथ हम सब लोगों की नैतिक जिम्मेदारी है कि उस वृक्ष को पुत्र के समान देखभाल करें। बाल कल्याण समिति के सदस्य मुनीश सिंह परिहार ने कहा कि वृक्ष धरा के आभूषण है करते दूर प्रदूषण हैं एक वृक्ष सौ पुत्र समान है वृक्ष द्वारा हमें निशुल्क विभिन्न रूपों में मानव सृष्टि को लाभ पहुंचाते हैं। इस मौके पर बाल कल्याण समिति के सदस्य अरविंद मिश्रा, संध्या सक्सेना,राम विनय यादव, आदि मौजूद रहे।

एसएस कालेज में कारगिल दिवस पर विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन

विधायक वीर विक्रम सिंह ने विजेताओं को किया पुरस्कृत

लोक पहल

शाहजहांपुर। 24वें कारगिल विजय दिवस पर 25 यूपी बटालियन एनसीसी की ओर से एसएस कॉलेज में विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कारगिल बलिदानियों की बहादुरी और वीरता को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, कटरा विधानसभा के विधायक वीर विक्रम सिंह ने कहा कि ये वही सच्चे नायक है जिन्होंने भारी कीमत चुकाने के बावजूद 'ऑपरेशन विजय' का नेतृत्व किया और अपने प्राणों की आहुति देकर कारगिल पर तिरंगा फ हरा दिया। कालेज के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार आजाद ने कहा कि यह पावन दिन उस युद्ध में शहीद हुए देश की आन, बान और शान भारतीय सेना के पराक्रम को याद करने और उनकी कुर्बानी को सम्मान देने का है। लेफ्टीनेंट डॉ आलोक कुमार सिंह ने कहा कि भारतीय इतिहास में 26 जुलाई बहुत ही गर्व का दिन होता है। इसी दिन भारत ने टाइगर हिल पर भारतीय झंडा लहराकर पाकिस्तान को धूल चटा दी थी। कारगिल दिवस थीम पर कई प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया और उनके विजेताओं को सूचना एवम् प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार के क्षेत्रीय अधिकारियों द्वारा पुरस्कृत किया गया। प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में कैडेट अभय, कैडेट लक्ष्मी, नेंसी, रिया, रुद्रांश, शिवांगी, दीपिका, राजन, रोहन और आदर्श ने पुरस्कार प्राप्त किया। पोस्टर प्रतियोगिता में कैडेट सृष्टि, उपासना, यशित, मीनाक्षी, मानसी, जितिन और प्रिंस पुरस्कृत किए गए। रंगोली प्रतियोगिता में कैडेट नेहा, कनक, पंकज, गीतांजलि, अंशिका और चित्रांशी पुरस्कृत किए गए।

'समर्पण' सेवा संस्था व 'यूनिटी' संस्था ने देवी प्रसाद स्कूल में भेंट की बैंच व कुर्सी

लोक पहल

शाहजहांपुर। समर्पण सेवा संस्था और यूनिटी संस्था के संयुक्त तत्वाधान में देवी प्रसाद कन्या पाठशाला में 3 बच्चों के लिए फर्नीचर दिया गया। इस अवसर पर दोनों संस्थाओं की संरक्षक डा. संगीता मोहन ने कहा कि संस्थाओं का मुख्य उद्देश्य जरुरतमंद बालिकाओं के सर्वांगीण विकास के लिए सहयोग करना है जिससे वह अपने जीवन में एक अहम मुकाम हासिल कर सकें। समर्पण सेवा संस्था के अध्यक्ष मीतू अग्रवाल ने कहा कि संस्था हमेशा से ही जरूरतमंद लोगों की मदद के लिए कार्य करती रही है। बालिकाओं की शिक्षा एवं स्वाबलंबन हमारा मुख्य उद्देश्य है। यूनिटी संस्था की अध्यक्ष एकता अग्रवाल ने कहा कि महिला सशक्तिकरण और स्वावलंबन के लिए बच्चियों को शिक्षित करना आवश्यक है। स्कूल की प्रधानाध्यापक असिलेख अवस्थी एवं प्रबंधक के.सी. मिश्रा ने सबका धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर रुचिता गुप्ता, रचना मोहन, मीतू अग्रवाल, एकता अग्रवाल एवं डॉ. संगीता मोहन शिक्षिका रेनू आदि उपस्थित रहे।

लघु उद्योग भारती की नई कार्यकारिणी का गठन

नवनीत जिलाध्यक्ष, हर्षवर्धन महामंत्री व निलय शुक्ला बने कोषाध्यक्ष

लोक पहल

शाहजहांपुर। लघु उद्योग भारती की एक बैठक एक होटल में आयोजित की गई। सर्वप्रथम जिला अध्यक्ष राकेश अग्रवाल ने मंच पर उपस्थित अतिथियों का परिचय के साथ सभी अतिथियों का स्वागत किया गया। इस दौरान नई कार्यकारिणी के लिए नवनीत गुप्ता को जिलाध्यक्ष, हर्षबर्धन अग्रवाल को महामंत्री व निलय शुक्ला को कोषाध्यक्ष घोषित किया गया। इस मौके पर विशिष्ट अतिथि अलीगढ़ के प्रदेश उपाध्यक्ष गौरव मित्तल ने बताया कि लघु उद्योग भारती प्रदेश तथा राष्ट्रीय स्तर पर कार्य कर रही है जिसकी लगभग 7 के आसपास सदस्यता है तथा नियमित रूप से उद्यमियों की किसी भी प्रकार की समस्या को हल कराने का प्रयास कर रही है। वरिष्ठ सदस्य रामचंद्र सिंघल ने कहा कि राज्यपाल के अध्यादेश के आने के बावजूद भी आज 3 माह बाद भी अधिकारियों द्वारा नियमावली बनाने में विलंब किया जा रहा है और बार-बार उद्यमियों को अभी भी मंडी समिति के अधिकारी मंडी शुल्क के लिए तंग कर रहे हैं। इसके उपरांत मुख्य अतिथि दीपक अग्रवाल ने नवनियुक्त पदाधिकारियों, संरक्षक सुरेश चंद्र सिंघल, मोहन मित्तल जिला अध्यक्ष नवनीत प्रकाश गुप्ता महामंत्री हर्षवर्धन अग्रवाल कोषाध्यक्ष निलय शुक्ला उपाध्यक्ष मनोज गर्ग, नीरज गर्ग श्याम प्रकाश गुप्ता व राजेंद्र गुप्ता संयुक्त महामंत्री विपनेश गुप्ता, दुर्गेश गुप्ता,रूम सिंह तथा आनंद मिश्रा को शपथ दिलाई।

बैठक में रामचंद्र सिंघल, आलोक गोयल,पुनीत प्रकाश गुप्ता, संजीव गुप्ता,महेंद्र कुमार दुबे, राहुल गुप्ता, मुकेश गुप्ता, विपनेश गुप्ता, दीपक गुप्ता, दुर्गेश गुप्ता, विवेक अग्रवाल, सुनील अग्रवाल, धर्मेंद्र अग्रवाल, अजय अग्रवाल, पवन कुमार कटियार, मोहन कुमार मित्तल, मनोज अग्रवाल, नीरज गर्ग, सुधीर कुमार अग्रवाल, योगेश गुप्ता, जगदीश कुमार, विक्रांत सूर्यमणि गुप्ता, राममिलन गुप्ता, गोपाल राम अग्रवाल, प्रदीप अग्रवाल, विनय अग्रवाल, मुकेश अग्रवाल, राजेंद्र कुमार गुप्ता, श्यामसुंदर गुप्ता, रूम सिंह, अरविंद कुमार, संजीव मिश्रा, रितेश मिश्रा, राहुल गुप्ता,अनुज गुप्ता आदि उद्यमी उपस्थित रहे।

एसएस कॉलेज के अनुशील ने प्राप्त किया जेआरएफ

लोक पहल

शाहजहांपुर। एसएस कॉलेज के छात्र अनुशील पाल ने इतिहास विषय में जूनियर रिसर्च फैलोशिप प्राप्त करके महाविद्यालय और जनपद का नाम रोशन किया है। अनुशील पाल ने वर्ष 217 में एसएस कॉलेज से बी कॉम ऑनर्स की परीक्षा प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण की। इसके बाद वर्ष 222 में एस एस कॉलेज से प्रथम श्रेणी में एमए इतिहास की परीक्षा उत्तीर्ण की। उन्होंने पहली बार में ही इतिहास विषय से जुनियर रिसर्च फेलोशिप प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की। इस सफलता के पीछे उन्होंने अपने गुरु प्रो अनुराग अग्रवाल, डॉ विकास खुराना, डॉ पद्मजा मिश्रा और अपने माता-पिता का आशीर्वाद बताया। उनके पिता ओमेंद्र पाल ने भी एसएस कॉलेज से ही बीकॉम पास किया था। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो आर के आजाद, कला संकाय अध्यक्ष डॉ आलोक मिश्रा, डा दीपक सिंह, डॉ धर्मवीर सिंह, डा बरखा सक्सेना, डा देवेंद्र सिंह और डा कमलेश गौतम आदि ने अनुशील की सफलता पर हर्ष व्यक्त किया है।

नगर निगम में जनसुनवाई दिवस का आयोजन

10 शिकायतें मिली, पांच का मौके पर निस्तारण

लोक पहल

शाहजहांपुर। नगर आयुक्त संतोष कुमार शर्मा की अध्यक्षता में नगर निगम कार्यालय में जन-सुनवाई दिवस कार्यक्रम आयोजित जनसुनवाई दिवस में लोगों ने साफ-सफाई, शुद्ध पेयजल की आपूर्ति, प्रकाश बिन्दू, नाली निर्माण एवं कर विभाग से सम्बन्धित अपनी-अपनी समस्याओं एवं शिकायतों को रखा। समस्याओं-शिकायतों को गंभीरतापूर्वक सुना गया व गंभीरतापूर्वक संज्ञान लेते हुये संबन्धित विभागों के अधिकारियों-कर्मचारियों को निर्देशित किया कि प्राप्त शिकायतों को प्राथमिकता के आधार पर निस्तारण कराया जाये। जन-सुनवाई दिवस में 10 समस्यायें-शिकायतें प्राप्त हुई, जिनमें से मौके पर ही 05 समस्या-शिकायत का त्वरित निस्तारण किया गया। संबन्धित अधिकारियों व कर्मचारियों को निर्देशित किया कि प्राप्त समस्याओं/शिकायतों का निस्तारण शीघ्र ही कराया जायें। जन-सुनवाई दिवस में अपर नगर आयुक्त एसके सिंह, महाप्रबंधक जल सौरभ श्रीवास्तव, मुख्य अभियंता सिविल एसके अम्बेडकर एवं नगर निगम के अन्य अधिकारी कर्मचारीगण तथा नगर के जन-सामान्य द्वारा सक्रिय प्रतिभाग किया गया।

सांसद मिथिलेश कुमार ने उठाई मैलानी फर्रुखाबाद रेल परियोजना को शुरु करने की मांग

लोक पहल

शाहजहांपुर। राज्यसभा सांसद मिथिलेश कुमार ने रेलवे बोर्ड के चेयरमैन अमित कुमार लोहाटी से रेल भवन में मुलाकात की। इस दौरान सांसद ने रेलवे बोर्ड के चेयरमैन को महत्वाकांक्षी रेल परियोजना मैलानी फर्रुखाबाद रेलवे लाइन पर कार्य शुरू करने तथा रोजा जंक्शन रेलवे स्टेशन पर गाड़ियों के ठहराव हेतु पत्र सौंपा।

पत्र के माध्यम से सांसद मिथिलेश कुमार ने बताया कि मैलानी फर्रुखाबाद नई रेलवे लाइन बिछाने हेतु सर्वे का कार्य पूर्ण हो चुका है। परंतु इस परियोजना पर अभी तक कार्य प्रारंभ नहीं हो सका है। लगभग 150 किलोमीटर लंबी इस रेल परियोजना के पूरा होने के बाद इस क्षेत्र में निवास करने वाले लाखों लोगों के लिए वरदान साबित होगी। तथा इस पिछड़े क्षेत्र में व्यवसाय तथा रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे। सांसद ने इस रेल परियोजना पर शीघ्र कार्य शुरू कराये जाने की मांग की। साथ ही सांसद मिथिलेश कुमार ने रोजा रेलवे स्टेशन पर विभिन्न ट्रेनों के ठहराव की मांग भी उठाई।

एसएसएमवी में बच्चों ने उठाया आइसक्रीम का लुत्फ, क्विज प्रतियोगिता में दिखाई प्रतिभा

लोक पहल

शाहजहांपुर। श्री शंकर मुमुक्षु विद्यापीठ में प्री प्राइमरी विंग के नन्हे मुन्ने बच्चे व उनकी अध्यापिकाएं अलग ही अंदाज में दिखे, मौका था विद्यालय में आइसक्रीम डे मनाने का। आइसक्रीम डे के अवसर पर विद्यालय में नर्सरी, एलकेजी तथा यूकेजी के नन्हे मुन्ने बच्चों को कक्षाअध्यापिकाओं ने विभिन्न क्राफ्ट एक्टिविटी व गेम कराए। बच्चों ने अपनी तोतली आवाज में कविताएं प्रस्तुत कर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। अंत में बच्चों को विद्यालय प्रबंधन की ओर से गर्मियों के मौसम की सबसे पसंदीदा चीज आइसक्रीम कोन वितरित किए गए, जिनके विभिन्न फ्लेवरस का बच्चों ने जमकर लुत्फ उठाया। इस दौरान कक्षा 9 से 12 के बच्चों की अंतरसदनीय क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया,जिसमें एकलव्य सदन के आर्यन सक्सेना,वर्णिका अग्रवाल, श्लोक खन्ना व नित्य मिश्रा ने पहला स्थान प्राप्त किया। द्वितीय स्थान पर

अर्जुन सदन के रुद्रांश, श्रेष्ठा, राज व वराली रहे। भरत सदन के तेजस, अनन्या,शैलेश व जहानवी को तृतीय स्थान पर संतोष करना पड़ा। इस अवसर पर प्रधानाचार्या डॉ मेघना मेंहदीरत्ता ने कहा कि पाठ्य सहगामी क्रियाओं के आयोजन से बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ता है। उन्होंने सभी विजयी प्रतिभागियों को शुभकामनाएं दीं। आयोजन में संगीता मेहरोत्रा, नैंसी, लीना मोहन, दीक्षा, रेखा कपूर, पूजा गुप्ता, किरण मेहरोत्रा, शिल्पी सक्सेना आदि शिक्षिकाओं का योगदान रहा।

एसएस कालेज में रोपे गए एक हजार पौधे

स्वामी चिन्मयानंद ने रोपा सहजन का पौधा

लोक पहल

शाहजहांपुर। स्वामी शुकदेवानंद कॉलेज में वृक्षारोपण जन आंदोलन कार्यक्रम अंतर्गत वृक्षारोपण कार्य को 'हरीतिमा अमृत वन एप' के माध्यम से सम्पन्न किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अधिष्ठाता स्वामी चिन्मयानंद सरस्वती ने सहजन का पौधा लगाकर किया। सचिव डॉ अवनीश मिश्रा ने नीम का पौधा रोपा।

प्राचार्य (प्रो) डॉ. राकेश कुमार आजाद ने अशोक का पौधा तथा अन्य शिक्षकों तथा छात्र-छात्राओं ने कुल 1 पौधों का रोपण कॉलेज प्रांगण एवं आस पास् के क्षेत्र में किया।कार्यक्रम का संचालन नोडल अधिकारी डॉ. आदर्श पाण्डेय ने किया द्यप्रो. आलोक मिश्रा, प्रो. आदित्य सिंह, प्रो. प्रभात शुक्ला, प्रो. मधुकर श्याम शुक्ला, प्रो. अजीत सिंह चारग, डॉ श्रीकांत मिश्र, डॉ संदीप अवस्थी, डॉ बलवीर, प्रांजल शाही, डॉ विकास खुराना, डॉ. शिखा सक्सेना, डॉ. निधि त्रिपाठी, डॉ.मुमताज हुसैन, केशव शुक्ला, शिवांगी शुक्ला, साक्षी पांडेय, मोहित पाण्डेय, आकांक्षा, विशेष ,अजय एवं दीपक तथा वनस्पति विज्ञान विभाग के छात्र छात्राओं द्वारा भी पौधारोपण का किया गया।

श्रद्धा, भक्ति एंव उल्लास के साथ मनाया गया गुरूदेव पार्थसारथी राजगोपालाचारी का 96 वां जन्मोत्सव

लोक पहल

शाहजहांपुर। श्री रामचन्द्र मिशन के गुरूदेव पार्थसारथी राजगोपालाचारी का 96वां जन्मोत्सव श्रद्धा, भक्ति एंव उल्लास के साथ मनाया गया। मिशन के अनुयायियों ने ध्यान साधना कर आध्यात्मिक उन्नति की कामना की तथा महात्मा रामचन्द्र जी महाराज की समाधि पर श्रद्धा सुमन अर्पित कर गुरूसता को प्रणाम किया। श्री रामचन्द्र मिशन के पूर्व अध्यक्ष एवं गुरूदेव पूज्य श्री पार्थसारथी राजगोपालाचारी के जन्मोत्सव का माहौल काफी भावुक था। उनके भौतिक सानिध्य को याद कर तमाम अभ्यासियों के आसू छलक आये। मिश्रीपुर स्थित श्री राम चन्द्र मिशन का माहौल श्रद्धा एंव भक्ति पूर्ण था मुख्य उत्सव के दिन आश्रम आध्यात्मिक चेतना का केन्द्र बन गया। जन्मोत्सव का शुभारम्भ मिशन के अनुयायिओं की ओर से पूज्य बाबू जी महाराज के समाधि स्थल पर पुष्प अर्पित कर किया गया। इसके उपरान्त सभी अभ्यासियो ने ध्यान कर आत्मोत्थान, मानव कल्याण व विश्व बंधुत्व की कामना की। इस मौके

पर अभ्यासियों को सम्बोधित करते हुए मिशन के जोन प्रभारी दीपक त्यागी नेकहा कि गृहस्थ जीवन में रहकर ईष्वर प्राप्ति का इस पद्धति जैसा कोई दूसरा माध्यम नहीं है। आज विश्व के 165 से अधिक देशों में इस सहज मार्ग साधना पद्धति से जुड़कर आध्यात्मिक लाभ उठा रहे हैं। उन्होंने कहा कि वर्तमान परिवेश में एक सक्षम गुरू के सानिध्य के बिना शांतिमय जीवन नही मिल सकता। उन्होंने कहा मिशन के अभ्यासी को मिशन के उत्थान के लिए तन, मन, धन से समर्पित होना चाहिए। केंद्र प्रभारी सर्वेश चंद्रा ने कहा कि राम चन्द्र जी महाराज नें राजयोग की जो सरल साधना पद्धति लोगो को उपलब्ध करायी वह सम्पूर्ण ब्रहमाण्ड में अद्वितीय है। वर्तमान में गुरूदेव पार्थसारथी राजगोपालाचारी की महा-समाधि के उपरान्त उनके उत्तराधिकारी पूज्य श्री कमलेश पटेल दाजी इसको जन जन तक पहुचाने का काम कर रहे है। इस मौके पर अभ्यासियों ने गीत भजन व वार्ता प्रस्तुत की । इस दौरान प्रशिक्षक श्री गोपाल अग्रवाल, राज गोपाल अग्रवाल, आनंद बाबू मिश्रा, ललिता त्यागी, सुयश सिन्हा, ममता अग्रवाल, कृष्णा भारद्वाज, लक्ष्य वाधवानी, सुनील अग्रवाल, संजीव मौर्या, सुनीता सिन्हा, राकेश भारद्वाज,संजय सक्सेना, प्रवीण बाजपेयी, प्रतिमा, ममत्य मिश्रा सहित मिशन के सैकड़ो अभ्यासी मौजूद रहे।

कटे फटे होंठ और तालू की समस्या से मिला छुटकारा

आरबीएसके ने लौटाई 17 बच्चों के चेहरे पर मुस्कान

लोक पहल

शाहजहाँपुर। कटे होंठ और तालू के साथ जन्मे बालक का चेहरा देखकर ही परिजन मायूस हो गए थे। दिन रात मेहनत करने के बाद चंद रुपए कमाने वाले पिता के सामने बच्चे का बड़ा ऑपरेशन करवाना किसी चुनौती से कम नहीं था। ऐसे में जब राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम (आरबीएसके) के माध्यम से बालक का उपचार हुआ और सर्जरी के बाद जब बच्चा समान्य बच्चों की तरह नजर आने लगा तो पूरे परिवार की खुशियां लौट आई।

राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम के अंतर्गत जन्म से कटे होठं और कटे तालू वाले बच्चों का निशुल्क ऑपरेशन के लिए आरबीएसके टीम द्वारा व स्माइल ट्रेन, सिप्स हॉस्पिटल के सहयोग से 17 बच्चें जो कि कटे होंठ और कटे तालू की समस्या से जूझ रहे थे उन्हें चिन्हित कर निशुल्क उपचार हेतु लखनऊ भेजा गया। आरबीएसके के प्रयासों से सभी की मुस्कान लौट आई है।

जनपद के भावलखेडा ब्लॉक के रज्जब कटिया गांव निवासी मध्यमवर्गीय परिवार में अबू जार ने जन्म लिया था। लेकिन बच्चा कटे होठ व कटे तालु के साथ जन्मा था। ऐसे में जहां बच्चे का चेहरा भी ठीक नहीं लग रहा था। जब आरबीएसके टीम से संपर्क हुआ तब टीम ने अबुजार की भी स्क्रीनिंग करने के बाद उसके इलाज की पहल शुरू की। बच्चे का पूरा उपचार नि:शुल्क हुआ है। बच्चा पूर्ण रूप से स्वस्थ्य और सामान्य बच्चों की तरह है।

डॉ. आर.के. गौतम मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने बताया कि जिले में ब्लाक स्तर पर मोबाइल हेल्थ टीम आरबीएसके कार्य करती हैं जो सरकारी और अर्धसरकारी विद्यालयों एवं आँगनवाड़ी केन्द्रों पर जाकर पंजीकृत बच्चो का स्वास्थ्य परीक्षण करती हैं। डीईआईसी मैनेजर संतोष कुमार ने बताया दो माह अप्रैल 223 से जून 223 तक जिले में तैनात आरबीएसके टीम ने कुल 144716 बच्चों की स्क्रीनिंग की। 85384 बच्चों की स्क्रीनिंग आंगनबाड़ी केंद्रों पर तो 59332 लाख बच्चों की स्क्रीनिंग सरकारी विद्यालय में की गई। इनमें 57 बच्चे सर्जरी के लिए चिन्हित किये गए और 53 बच्चों की सर्जरी की गई। शेष 2 बच्चों की सर्जरी करने का कार्य प्रक्रिया में है।

आर्थिक विकास से ज्यादा महत्वपूर्ण है सामाजिक विकास : प्रो. शर्मा

एसएस कालेज में राष्ट्रीय सेमिनार का हुआ समापन

लोक पहल

शाहजहाँपुर। एसएस कॉलेज में सामाजिक उद्यमिता पर आयोजित संगोष्ठी के समापन के अवसर पर डीएन कॉलेज, मेरठ के वाणिज्य विभागाध्यक्ष प्रो. एसके शर्मा ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुये कहा कि सामाजिक विकास आर्थिक विकास से भी ज्यादा महत्वपूर्ण होता है क्योंकि एक विकसित समाज ही स्थिर आर्थिक विकास को प्राप्त कर पाता है। इसलिए अर्थव्यवस्था के स्थायी विकास के लिए सामाजिक कल्याण और सीमान्त वर्ग का उत्थान आवश्यक है। उद्यमियों से अपेक्षा की जाती है कि गरीब बच्चों की शिक्षा, गरीब लड़कियों के विवाह, पुनर्वास योजनाओं आदि पर विनियोग करें। इससे पूर्व समापन सत्र का शुभारंभ स्वामी शुकदेवानंद सरस्वती के चित्र पर पुष्पांजलि से हुआ। प्राचार्य प्रो आरके आजाद ने कहा कि महाविद्यालय के छात्रों को विभिन्न

विषयों पर ज्ञान से परिपूर्ण करने, अलग-अलग स्थानों से विद्वान आते हैं। इनसे प्राप्त ज्ञान ही छात्रों के लिए बौद्धिक संपदा है। डॉ रूपक श्रीवास्तव के संचालन में हुए कार्यक्रम के अंत में तीनों तकनीकी सत्रों में प्रथम, द्वितीय, तृतीय और सांत्वना पुरस्कार प्राप्त करने वाले 15 विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया।

पुरस्कृत होने वाले विद्यार्थियों में दशनीत कौर, श्रीजी सेठ, वैष्णवी रस्तोगी, अंश कपूर, अरमान महरोत्रा, दिव्यांशु अग्रवाल, कुशल गोयल, माणिक महरोत्रा, शान्तम अरोड़ा, शाश्वत शर्मा, निहारिका सिंह, गुनगुन सिंह, विनायक कपूर, शगुन कपूर, काली खन्ना सम्मिलित थे। अंत में डॉ देवेंद्र सिंह ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर डा. अनुराग अग्रवाल, डॉ कमलेश बाबू गौतम, डॉ गौरव सक्सेना, डॉ विजय तिवारी, डॉ अजय कुमार वर्मा, डॉ संतोष प्रताप सिंह, डॉ सचिन खन्ना, कु. ब्रज लाली, अपर्णा त्रिपाठी आदि मौजूद रहे।

क्यूट पीजी में पद्मनाभ कृष्णदेव शर्मा का शानदार प्रदर्शन

नगर आयुक्त संतोष शर्मा के पुत्र हैं पद्मनाभ

लोक पहल

शाहजहांपुर। नगर आयुक्त संतोष कुमार शर्मा के सुपुत्र पद्मनाभ कृष्णदेव शर्मा ने संयुक्त विश्वविद्यालय प्रवेश परीक्षा (सीयूईटी पीजी) में 97 प्रतिशत अंक हासिल किये हैं, पद्मनाभ ने राजनीति विज्ञान में शत प्रतिशत अंक हासिल कर परिवार और विद्यालय का नाम रोशन किया है। पद्मनाभ ने इंटर तक की शिक्षा कानपुर के जीडी गोयनका पब्लिक स्कूल से प्राप्त की है। उनकी इस उपलब्धि पर माता पिता सहित अन्य लोगों ने बधाई दी है।

एसएस कालेज में एम.काम के प्रवेश शुरू, दस अगस्त अन्तिम तिथि : डा. अनुराग

लोक पहल

शाहजहांपुर। स्वामी शुकदेवानन्द महाविद्यालय में एम.काम. के प्रवेष आरंभ हो चुके है। प्रवेश के लिए पंजीकरण की प्रक्रिया 18 जुलाई से दस अगस्त 223 तक जारी रहेगी। वाणिज्य विभागाध्यक्ष डा. अनुराग अग्रवाल ने बताया कि एम.काम. में प्रवेश के लिए स्थान सीमित है। इच्छुक छात्र अविलंब ऑनलाईन रजिस्ट्रेशन कर विभाग में डा. गौरव सक्सेना से सम्पर्क करें। उन्होंने बताया कि इस बार राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत कोई भी छात्र को किसी दो पाठ्यक्रमों को एक साथ करने की अनुमति प्रदान की जाएगी जिसमें एक पाठ्यक्रम संस्थागत छात्र के रूप में तथा दूसरा पाठ्यक्रम व्यक्तिगत अथवा ऑनलाईन किया जा सकेगा। विश्वविद्यालय के पोर्टल पर ऑनलाईन प्रवेश हेतु आवेदन प्रारंभ हो चुके है दस अगस्त को अन्तिम तिथि के बाद पंजीकरण प्रक्रिया बंद हो जाएगी। जिन छात्रों को एमकाम. में प्रवेश लेना है वे तुरंत ऑनलाईन पंजीकरण कर महाविद्यालय के वाणिज्य विभाग में सम्पर्क करें।

सम्पादकीय

प्रतिभा का पलायन एक गंभीर समस्या

एक ओर जहां भारत की सरकार देष में विकास के तमाम दावे करती दिखाई दे रही है आंकड़ों में बेरोजगारी की समस्या का समाधान भी दिखाया जा रहा है लेकिन वहीं दूसरी ओर देश का युवा रोजी रोटी की तलाश में अपना घरवार छोड़कर दूसरी देश की नागरिकता लेने को तैयार है। विदेशों में नौकरी करने व वहीं बसने की युवाओं होड़ मची हुई है। देश की प्रतिभा के पलायन को रोकने के लिए समाज से लेकर सरकार तक कोई ठोस कदम उठाने को तैयार नहीं है। जब व्यक्तिगत सुविधाओं, रोजी-रोजगार और बेहतर जीवन जीने की लालसा में किसी देश के लोग नागरिकता छोड़ कर दूसरे देशों में जाकर बसने लगें, तो यह निश्चित रूप से उस देश के लिए चिंता का विषय होना चाहिए। प्रतिभा पलायन को लेकर लंबे समय से चिंता जताई जाती रही है।

कुछ साल पहले तक युवाओं को भावनात्मक रूप से प्रेरित करने का प्रयास किया जाता रहा कि जिस देश ने उनकी पढ़ाई-लिखाई पर इतना खर्च किया है, जब सेवा देने का समय आए तो उस देश को छोड़ कर अपनी प्रतिभा का योगदान किसी और देश में देना नैतिक रूप से सही नहीं होगा। मगर इस प्रेरणा का कोई असर नहीं हुआ। उत्तरोत्तर प्रतिभा पलायन बढ़ता गया। अब स्थिति यह है कि जिनके भारत में जमे-जमाए कारोबार हैं, उनमें भी अपनी नागरिकता त्याग कर दूसरे देशों में जाकर बसने की प्रवृत्ति तेजी से बढ़ी है।

सरकार के आंकड़ो के अनुसार पिछले साढ़े तीन वर्षों में हर दिन लगभग साढ़े चार सौ भारतीयों ने अपनी नागरिकता छोड़ी है। सबसे अधिक पिछले साल सवा दो लाख से ऊपर लोगों ने भारत की नागरिकता छोड़ दी। ये लोग एक सौ पैंतीस देशों में गए हैं, जिनमें पाकिस्तान और सऊदी अरब भी शामिल हैं। आमतौर पर दूसरे देशों में जाकर बसने का प्रमुख कारण रोजी-रोजगार होता है। भारत में हर साल लाखों युवा इंजीनियरिंग, चिकित्सा और अन्य क्षेत्रों में तकनीकी शिक्षा हासिल करके रोजगार की तलाश में निकलते हैं, मगर उनमें से चालीस फीसद को भी उनकी इच्छा और क्षमता के अनुरूप रोजगार नहीं मिल पाता। ऐसे में वे दूसरे देशों का रुख करते हैं। इसके अलावा बहुत सारे युवा इसलिए भी दूसरे देशों का रुख करते हैं कि यहां उन्हें उनके काम के अनुरूप पैसा नहीं मिल पाता। कई विकसित देशों की तुलना में यहां वेतन, भत्ते और काम करने की स्थितियां बहुत खराब हैं। इसलिए भी वे मौका मिलते ही दूसरे देशों में चले जाते और फिर यहां की नागरिकता छोड़ देते हैं। बहुत सारे युवा विदेशों में पढ़ने जाते हैं और फिर वहीं की नागरिकता हासिल कर लेते हैं। मगर पिछले कुछ वर्षों में ऐसे भी अनेक लोगों ने यहां की नागरिकता त्याग दी, जिनके यहां अपने कारोबार थे और उन्हें समेट कर वे दूसरे किसी देश में चले गए। यानी उन्हें यहां कारोबार की स्थितियां अनुकूल नहीं लगीं। इसके अलावा कई लोग असुरक्षाबोध के चलते भी कहीं और जा बसे। जनसंख्या के आधार पर भारत दुनिया का सबसे बड़ा देश बन चुका है। ऐसे में माना जा रहा है कि इसे जनसांख्यिकीय लाभांश दूसरे देशों की अपेक्षा अधिक मिलेगा और अर्थव्यवस्था में तेजी से विकास होगा। इसी के मद्देनजर सरकार ने कौशल विकास संबंधी कार्यक्रम चलाए हैं, अपने रोजगार शुरू करने के लिए युवाओं को प्रोत्साहित किया जा रहा है। इसके बावजूद अगर हर साल नागरिकता छोड़ने वालों की तादाद कुछ बढ़ी हुई ही दर्ज हो रही है, तो इसके कारणों पर गंभीरता से ध्यान देने और उनके समाधान के प्रयास की जरूरत है। आर्थिक मोर्चे पर बेहतरी के लिए जरूरी है कि अपनी बेहतरीन प्रतिभाओं को देश में ही रह कर काम करने का संतोषजनक वातावरण तैयार किया जाए। रोजगार के नए अवसर केवल कैशल विकास से सृजित नहीं होते, इसमें श्रमशक्ति को मुख्यधारा से जोड़ने वालों के उद्यम और प्रतिभा की भी जरूरत होती है। जब देश की प्रतिभाएं विदेशों में जाकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करेंगी तो उसका लाभ भी उन्हीं देशों को होगा। ऐसे में जरूरत इस बात की है कि सरकार कुछ ऐसे प्रयास करें जिससे भारत की युवा प्रतिभाएं अपने देश में ही रहकर देश की प्रगति में सहभागिता करें। इसके लिए हमें उद्योग जगत के साथ-साथ सूक्ष्म एवं लघु उद्योग को विकसित करना होगा, साथ ही रोजगार के नए अवसर भी तलाशने होंगे।

समस्या में छुपा समाधान

डा. पूर्णिमा श्रीवास्तव
जयपुर

संसार में प्रत्येक प्राणी दिन-प्रतिदिन ढेरों समस्याओं से जूझता है या यूं कहें आज 99 प्रतिशत लोगों के दिन की शुरुआत समस्या के साथ ही प्रारंभ होती है और समस्या के साथ ही दिन की समाप्ति है। और इसी क्रम चक्र के साथ जीवन का बोझ उठाया जा रहा है आज हम जीवन जीना भूलकर समस्या को जी रहे हैं क्योंकि न तो हम स्वयं को सक्षम रहे है न हमें आस-पास ऐसा कोई मिल रहा है जो एक मैजिक से समस्या को लुप्त कर दे, या कोई समाधान देदे , देखा जाए तो हम समाधान को समझौते का चोला पहनाकर स्वयं को संतुष्ट करने का प्रयास कर रहे हैं। लेकिन जीवन है तो समस्याएँ तो आयेंगी ही,समस्याएँ ही तो जीवन को परिपक्व करने का उपाय हैं। समस्याएँ आती हैं, और उनसे जूझते हुए ही परिपक्वता की ओर आगे बढ़ते हैं समस्याएँ तभी परिपक्व बना सकती है जब स्वयं उनसे जूझने का प्रयास किया जाए, जब समाधान दूसरों के पदचिन्हों पर चलकर नहीं स्वयं की चेतना समझ और प्राथमिकता के आधार पर हो,समस्या हमारी हो और समाधान किसी और के तो हमारी चेतना और समझ को कार्य करने का अवसर कैसे मिलेगा क्योंकि वह तो दूसरों के अनुभव आधारित हुई तो समाधान खोजने की परिपक्वता का अवसर भी दूसरों को ही मिलेगा हमारी चेतना कभी परिपक्व नहीं हो पाएगी। किसी और पर निर्भर होने से अच्छा स्वयं पर निर्भरता की और प्रयास किया जाए कहीं से समाधान खोजने की अपेक्षा स्वयं की सक्षमता आवश्यकता प्राथमिकता को समझा जाने का प्रयास किया जाना चाहिए अपनी चेतना समझ को ऊँचा उठाने पर कार्य किए जाने की आवश्यकता है। हर समस्या अपने साथ समाधान लेकिन आती है आवश्यकता है तो उस चेतन समझ की जो उस समस्या में छिपे समाधान की गुत्थी को सुलझाने में अपनी अहम भूमिका निभाती है परंतु यह तभी मुमकिन है जब चेतना अपने पूर्ण परिपक्वता को प्राप्त कर चुकी है उसके लिए चेतना समझ को जागृत और विकसित होना भी महत्वपूर्ण है

जैसे-जैसे चेतना अपने सक्रिय अवस्था में आकर जागृत होना प्रारम्भ होगी, चेतना समझ का स्तर भी ऊपर की ओर गति कर जागरूकता उत्पन्न करना प्रारम्भ करेगी और परिस्थितियों को अधिक चौतन्य होकर प्रत्युत्तर दे पाने की सक्षमता विकसित होने लगेगी। जैसे-जैसे चेतना विकसित होती है, व्यक्ति समस्याओं से निपटने में अधिक सक्षम होता जाता है, हाँ, नयी चेतना समझ के साथ नयी समस्याएँ भी आयेंगी, लेकिन वे उच्च तल की होंगी,और जो नयी चेतना समझ नयी समस्याएँ लाती हैं, वह नये

समाधान भी लाती हैं। उच्चतर चेतना एक स्पष्टता देती है, समझ और साहस देती है। यह कोई समाधान नहीं बल्कि, चेतना समझ को ऊपर उठाने की कला है। फिर व्यक्ति स्वयं ही अपने समाधान खोजने में सक्षम होगे और एक दिन ऐसा भी आ जाएगा जब समस्या स्वयं ही समाधान बन जाएगी। दुख को स्थिर जीवन की नींव के रूप में देखे जाने के साथ, यह प्रश्न उठता है - मुझे कष्ट क्यों उठाना चाहिए? या, मुझे समस्याएँ क्यों हैं?, सर्व प्रथम समस्या को स्वीकार करना सीखना है।

किसी भी समस्या को हल करने के लिए पहला कदम यह स्वीकार करना है कि समस्या है। इसके अस्तित्व को नकारने से इसके सुधार में देरी होगी। समस्या के समाधान के लिए समस्या की उपस्थिति की पहचान करना महत्वपूर्ण है,और अक्सर हम जिन समस्याओं का सामना करते हैं वे वास्तव में समस्याएँ नहीं होती हैं। लेकिन, ये एक अंतर्निहित समस्या के लक्षण हैं। समस्या की प्रकृति का पता लगाएं प्रत्येक समस्या की अपनी प्रकृति होती है, जबकि कुछ हमारी मानसिक क्षमता में बाधा डालती हैं, वहीं कुछ ऐसी होती हैं जो हमें शारीरिक रूप से कमजोर कर देती हैं और कुछ हमारे पेशेवर जीवन को कमजोर कर देती हैं। अपनी समस्या की प्रकृति का पता लगाना किसी समस्या को हल करने का अगला कदम है। हालाँकि किसी समस्या को कार्य-संबंधी या स्वास्थ्य-संबंधी इत्यादि के रूप में टैग करना आसान है, लेकिन हमारे जीवन में उनकी प्रत्यक्ष अभिव्यक्तियों की पहचान करना कठिन हो सकता है। काम से संबंधित समस्या जल्द ही स्वास्थ्य संबंधी समस्या को जन्म दे सकती है और इसका विपरीत भी हो सकता है। इसलिए समस्या की प्रकृति का पता लगाने से इसे हल करना आसान हो जाता है और इसे हमारे जीवन के अन्य पहलुओं में फैलने से रोका जा सकेगा।

समस्या के कारण की पहचान करना किसी भी समस्या का समाधान उस कारण के ज्ञान में निहित है जिसने सबसे पहले समस्या उत्पन्न की है। यदि कारण हमसे छिपा हुआ है तो उसे हल करने का हमारा संघर्ष व्यर्थ चला जाएगा। शायद यही एक कारण है कि प्रौद्योगिकी के युग में प्रस्तुत समस्याओं के समाधान आधे-अधूरे ही साबित हो रहे हैं। शायद मानवता की एकमात्र समस्या यह नहीं जानना है कि वास्तव में उसकी समस्या क्या है । हमारी सभी समस्याएं आपस में जुड़ी हुई हैं। यदि कोई समस्याओं को हल करने में उत्सुक है, तो इसके लिए आवश्यक ज्ञान प्राप्त करना ही एकमात्र तरीका है। आइंस्टीन ने कहा था कि हम किसी समस्या को चेतना के उसी स्तर से हल नहीं कर सकते, जिसने उसे बनाया है। इसलिए चेतना का स्तर उच्च होना आवश्यक है, और उसका स्त्रोत है ज्ञान। ज्ञान के अतिरिक्त चेतना क्या है ? जितना अधिक हम जानते हैं, उतना ही अधिक हम समझते हैं कि हम क्या देख और महसूस कर रहे हैं। जो चट्टान के किनारे पर खड़ा है वह जानता है कि प्रगति एक कदम पीछे जा रही है, क्योंकि यह बड़ी तस्वीर पेश करती है। अपनी समस्या को ज्ञान के प्रकाश में देखने में सक्षम होना उन्हें हल करने जितना ही अच्छा और सरल मार्ग है।

जलवायु लक्ष्यों हेतु अनिवार्य है बहुआयामी प्रतिबद्धता

शिशिर शुक्ला
शाहजहांपुर

आज जहां एक ओर अनियंत्रित एवं स्वार्थपूर्ण मानवीय गतिविधियों के कारण वैश्विक तापन जैसी चुनौतियां भीषण से भीषणतम रूप धारण करने की ओर अग्रसर हैं, वहीं दूसरी ओर इन ज्वलंत समस्याओं से निजात पाने के लिए राष्ट्रों के द्वारा अपने अपने स्तर पर प्रयास भी जारी हैं। किंतु गौरतलब है कि जलवायु परिवर्तन की समस्या इतनी गंभीर हो चुकी है कि छोटे-छोटे प्रयासों के द्वारा इसका कोई ठोस हल निकाल पाना लगभग नामुमकिन है। जाहिर सी बात है कि यदि किसी विकराल स्थिति से छुटकारा पाना हो तो सर्वप्रथम उसे उत्पन्न करने वाले मूल कारकों पर प्रभावी अंकुश लगाना पड़ेगा। एक ताजा रिपोर्ट के आंकड़े बताते हैं कि ग्लोबल वार्मिंग की गति ०.2 डिग्री सेल्सियस प्रति दशक की दर से बढ़ रही है। दस वर्षों में तापमान का इतना उछाल निश्चित रूप से चिंता का विषय है। जानकारी के मुताबिक वैश्विक तापन में निरंतर हो रही वृद्धि के पीछे ग्रीनहाउस गैसों का बेतहाशा उत्सर्जन ही जिम्मेदार है। आंकड़े बताते हैं कि विभिन्न औद्योगिक गतिविधियों के माध्यम से पृथ्वी के वातावरण में प्रतिवर्ष लगभग 54 गीगाटन कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन हो रहा है। आखिरकार इन आंकड़ों का क्या अर्थ है, इनसे स्पष्ट है कि हम अभी भी इस समस्या को लेकर लेशमात्र भी गंभीर नहीं हैं।

2015 में हुए पेरिस जलवायु परिवर्तन सम्मेलन जिसमें 195 देशों ने प्रतिभाग करके वैश्विक तापन को एक सीमारेखा के भीतर ही बनाए रखने के लिए प्रतिबद्धता जताई थी, को धीरे धीरे एक दशक बीत रहा है। किंतु इस दशक के दौरान समस्या समाधान की ओर उन्मुख न होकर विकरालता के नवीन स्तर को स्पर्श कर चुकी है। वनों का अनियंत्रित कटान, आर्थिक लाभ हेतु कृषि योग्य भूमि को आवासीय भूमि में तब्दील करने की होड़, भूजल का अतिदोहन, औद्योगीकरण की बढ़ती रफ्तार के फलस्वरूप वातावरण में ग्रीन हाउस गैसों का अनियंत्रित उत्सर्जन, ये कुछ ऐसी मानवीय गतिविधियां हैं जिन्होंने संपूर्ण पृथ्वी को अस्तित्व के संकट की ओर धकेलना शुरू कर दिया है। जियोफिजिकल रिसर्च लेटर्स में प्रकाशित अध्ययन ने एक चौंकाने वाला खुलासा किया है। इसके अनुसार भूजल के अंधाधुंध दोहन के परिणामस्वरूप वर्ष 1993 से 2010 के मध्य पृथ्वी लगभग 80 सेंटीमीटर पूर्व की ओर झुक गई है। शोध के अनुसार इसका प्रभाव जलवायु पर पड़ने की पूर्ण संभावना है। मानवीय कृत्यों के द्वारा उत्पन्न हुए जलवायु परिवर्तन का एक अन्य ताजा उदाहरण

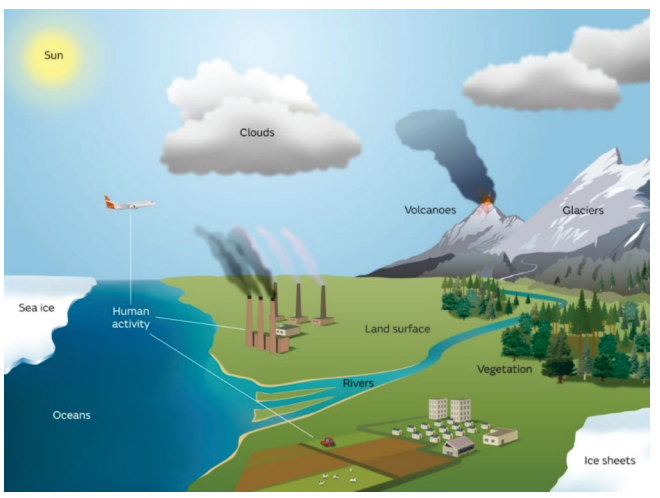

यह है कि समुद्र तल पर शीतल जल की वह महत्वपूर्ण परत जिसके कारण समुद्र में वातावरण की गर्मी एवं ग्रीन हाउस गैसों को अवशोषित करने की क्षमता विद्यमान होती है, शनैः शनैः गर्म होकर संकुचित होती जा रही है। ध्यातव्य है कि ये सारे दुष्प्रभाव उस समय से दिखाई देना शुरू हुए हैं जब से औद्योगिक युग का आरंभ हुआ है।

प्रश्न यह उठता है कि वर्तमान परिस्थितियों के चलते पृथ्वी और मानव के अस्तित्व पर मंडराते संकट का सामना आखिरकार कैसे किया जाए। इतना तो पूर्णतया निश्चित है कि जब तक स्वार्थवादी मानवीय गतिविधियों पर लगाम नहीं लगाई जाएगी, तब तक जलवायु परिवर्तन के खतरों से मुक्ति मिलने वाली नहीं है, भले ही इसके लिए कितनी कोशिशें क्यों न कर ली जाएं। व्यक्ति, समाज, राष्ट्र एवं विश्व प्रत्येक स्तर पर ऐसी नीतियों एवं योजनाओं का क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाना चाहिए जोकि स्वैच्छिक न होकर बाध्यकारी हों। विभिन्न देशों के द्वारा नेट जीरो के लक्ष्य तो निर्धारित किए गए हैं, किंतु एक गैर बाध्यकारी योजना के तौर पर। औद्योगिक अपशिष्ट, ग्रीनहाउस उत्सर्जन, वनों का कटान, भूजल दोहन आदि कृत्यों पर जब तक कानूनी अंकुश नहीं लगेगा, तब तक इन गतिविधियों में कोई प्रभावी कमी नहीं आएगी। नतीजतन वैश्विक तापन एवं जलवायु परिवर्तन की चुनौतियां यथावत बनी रहेंगी। एक अन्य अतिमहत्वपूर्ण कदम जो जलवायु संबंधी लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु उठाया जाना चाहिए, वह है हरित ऊर्जा के उत्पादन में बढ़ोतरी। जलवायु विशेषज्ञों का मानना है कि भारत को 2070 तक शून्य कार्बन उत्सर्जन का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए हरित ऊर्जा का उत्पादन मौजूदा दर से ढाई गुना करना होगा। यद्यपि इस संबंध में एक अच्छी रिपोर्ट यह है कि भारत अन्य देशों की अपेक्षा हरित ऊर्जा के क्षेत्र में कहीं बेहतर स्थिति में है। वर्तमान में अनवीकरणीय ऊर्जा के स्रोतों पर निर्भरता घटाकर, नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों से संबंधित तकनीकी को उन्नत बनाने की दिशा में प्रभावी नीतियां एवं कदम उठाने की आवश्यकता है। निस्संदेह कानूनी बाध्यताओं के साथ साथ अक्षय ऊर्जा के उत्पादन को प्रोत्साहित करने से वैश्विक तापन एवं जलवायु परिवर्तन के खतरों पर प्रभावकारी लगाम लगाई जा सकती है।

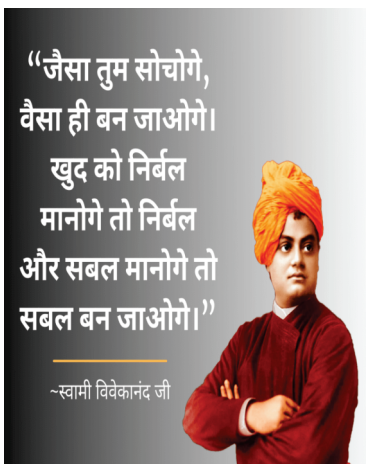

भिया के तेजस्वी पंखे

रेखा शाह आरबी
समीक्षक

भूपेंद्र भारतीय द्वारा लिखित 'भिया के तेजस्वी पंखे' व्यंग्य संग्रह वैसे तो धीरे-धीरे देश के कोने कोने में पहुंच रहे हैं। भूपेंद्र भारतीय जी का भले यह पहला व्यंग्य संकलन है। पर वह व्यंग्य की दुनिया मे किसी परिचय के मोहताज नहीं है। क्योंकि हर दिन किसी न किसी राष्ट्रीय समाचार पत्र में आपके व्यंग्य प्रकाशित होते ही रहते हैं। और हम उन्हें गाहे-बगाहे पढ़ते रहते हैं।

'भिया के तेजस्वी पंखे' नाम पढ़ कर ही यह ज्ञात हो जाता है कि किसी मध्यप्रदेश के मालवा निवासी ने लिखा है। यह पुस्तक पढ़ने पर ज्ञात होगा कि जब एक अधिवक्ता व्यंग्य लिखता है तो बहुत ही तीखा मीठा काम्बिनेशन हो जाता है। वह अपने तरकश के सारे तीक्ष्ण व्यंग्यात्मक बाणो को व्यंग्य शब्दों में परिवर्तित करके आम जनता की समस्या को उजागर करते हुए अपनी बात कहता जाता है। कभी तीखे रूप में तो कभी मीठे रूप में कहता है। भिया के तेजस्वी पंखे में एक दो नहीं पूरे 61 व्यंग्य के ब्लेड नूमा पंखे लगे हैं। जो पूरी तरह पैनें व धारदार है और पूरी रफ्तार में चलते है। वैसे तो देखा जाए तो भूपेंद्र जी के तेजस्वी पंखे अपनी उच्च गुणवत्ता के चलते,

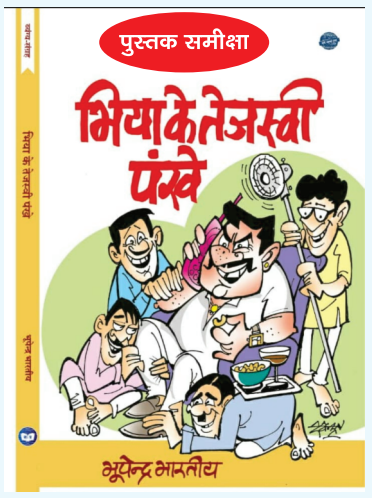

चलने के मामले में पहले ही पूरी रफ्तार पकड़ चुके हैं। पाठक इनकी रंजक व रोचक हवाओं का आनंद ले रहे हैं। पर यदि अभी तक ये पंखे आप तक नही पहुचे है तो आप इस पंखे तक पहुंचने की कोशिश कर सकते हैं। भूपेंद्र भारतीय हमारे समय के व्यंग्य के सशक्त हस्ताक्षर हैं। उन्हें समसामयिक विषयों, यात्रा संस्मरणों, कविता आदि पर गहरी पकड़ है। इस कारण उनके अधिकांश व्यंग्य समसामयिकी हैं और कुछ व्यंग रचनाओं में वह अपने साथ सहयात्री के रूप में पढ़ने वालों को भी बिठा लेते हैं। वह भूत और भविष्य से ज्यादा वर्तमान के लेखन को महत्व देते हैं।

उनके इस व्यंग्य संकलन की शुरुआत पत्राचार और चौंकाने वाले नतीजों से शुरू होकर लोकतंत्र की बारात में खान-पान का ध्यान रखें, हम नहीं मानने वाले, गधे हंस रहे हैं, साईं इतना दीजिए जा में कुटुम्ब बच जाए, व्यस्त लोगों की दुनिया ,अजर अमर होने की फिराक में, सब्जी के ठेले पर लोकतंत्र, राजनीति में चाणक्य वाद, भिया के तेजस्वी पंखे, बापू की बकरी फिर खो गई आदि ऐसे ही अनेक रोचक, तीखे तेवर वाले व मारक बाणों से सजा हुआ यह व्यंग्य संकलन है। जिसकी भूमिका वरिष्ठ साहित्यकार बृजेश कानूनगो जी ने लिखा है जो व्यंग के सशक्त हस्ताक्षर और जानकार हैं। साथ ही पुस्तक का आवरण पृष्ठ प्रसिद्ध कार्टूनिस्ट डॉ देवेन्द्र शर्मा ने बनाया है। पुस्तक को लेखक ने अपने सहज, सरल और पठनीय भाषा से व्यंग्य रचनाओं में चमत्कार उत्पन्न करने का प्रयास किया है तथा लोक भाषा एवं लोक मुहावरों का भी भरपूर प्रयोग किया गया है। पहला व्यंग्य संग्रह होने के उपरांत भी कमोबेश लेखक अपने प्रयास में सफल हुए है । संग्रह की रचनाएं आपको पसंद आएगी ऐसा मुझे विश्वास है।

चर्चाओं में रहने का दुख

व्यंग्य

अयोध्या प्रसाद
लखनऊ

सावन का महीना चल रहा है। पिछले कई दिनों से दो चीजें सार्वजनिक चर्चा में हैं। एक तो टमाटर और दूसरे बादल। दोनों ही अपनी वर्तमान स्थिति से दुखी हैं। वैसे भी टमाटर पर काफी कुछ लिखा और प्रकाश डाला जा चुका है, जिसकी वजह से वह सब्जियों में सर्वाधिक प्रकाशमान हो रहा है। पिछले कुछ दिनों में टमाटर ने साहित्य में जो स्थान प्राप्त किया, अन्य सब्जियां बेचारी नामलेवा को निचले पायदान पर खड़ी तरसती रहीं। टमाटर ने इतनी ऊंचाइयां ले लीं कि लोगों की पहुंच से बाहर होने लगा। उसे बड़े ताने झेलने पड़े इस बार ! जब वह दस रूपए किलो के भाव बिक रहा था तो लोग उसकी ओर आंख उठाकर भी देखना पसंद नहीं करते थे। बहुतायत में होने के कारण बेचारा बिकने को तरस जाता था। उसके गिरे हुए दिनों में सब्जी वाला पंद्रह रूपए के दो किलो तक देने को तैयार हो जाता था तब भी लोग उसकी अनदेखी कर आगे बढ़ जाते थे। ग्राहक माथे पर बल डाले भुनभुनाता-आखिर निरा टमाटर भी तो नहीं खाया जा सकता। फ्रिज में पड़े पड़े ठंढ के मारे सिकुड़ता रहता था बेचारा...और जब उसके दिन बहुरे और वह भी आम से खास हो गया तो लोगों के निशाने पर आ गया और सार्वजनिक चर्चा का पात्र बन गया। वास्तविकता यही है कि कोई किसी की प्रगति से खुश नहीं होता ।.....चूंकि टमाटर इन दिनों सेलिब्रेटी श्रेणी में स्थापित है इसलिए वह सेल्फी लेने के काम में भी आने लगा ! कुछ सोशल मीडिया प्रेमी सेल्फी विद टमाटर को स्टेटस पर लगाकर और हास्यास्पद रील बनाकर लाइक और कमेंट्स प्राप्त करने में मशगूल हैं ।.....कुछ संवेदनशील, समझदार लोग तो रिश्तेदार के यहां जाने पर मिठाई की जगह अब टमाटर पैक कराकर ले जा रहे हैं । खैर ! जो आम से खास हो जाता है, वह चर्चा में तो आ ही जाता है । इंसान हो या टमाटर !

अब जरा बादलों की चर्चा कर लें। जहां तक बादलों की बात है, पानी बरसाने से लेकर संदेशा पहुंचाने तक तमाम काम बादल प्राचीन काल से करते रहे हैं। प्राचीन काल में वे अनुनय विनय और दिशा निर्देशन पर संदेश, प्रेषक से प्राप्तकर्ता तक पहुंचा दिया करते थे। प्रेषक संदेश प्राप्तकर्ता के घर का अता-पता, आस-पड़ोस के लैंडमार्क इत्यादि बता देते थे तो बादल बिना भटके सीधे प्राप्तकर्ता के निवास के आसपास डेरा डालकर उनका संदेश यथावत् पहुंचा देते थे ।.....अब तो साधारण डाक से पत्र-पत्रिकाएं जल्दी नहीं मिलतीं । .....जमाना बदल गया । इंटरनेटी दुनिया ने तमाम संसाधन जुटा दिए । बादलों को समझाने, रास्ता बताने का झंझट खत्म। सेवा प्रदाता कंपनी से मोबाइल रिचार्ज कराओ और बैठे बिठाए बातें करो, मैसेज करो और ज्यादा मन करे तो वीडियो काल करके आनलाइन देखा-देखी कर लो । बादल इन दिनों कुछ लोगों के सीधे निशाने पर हैं । सखियां टाइप युवतियां उनके आकाशीय मार्ग में बिलावजह की चहलकदमी से खिन्न हैं। बेचारी आस लगाए बैठी हैं कि सावन में रिमझिम बरसात होती तो कजरी वगैरह गाने का सुख प्राप्त करतीं लेकिन भरे सावन में भीषण गर्मी, बिजली की अनिश्चितकालीन आवाजाही और उमस उन्हें हलकान किए डाल रही है। इसी वजह से वे नीम के पेड़ पर झूले डालने के इंतजार में सूखती चली जा रही हैं। कुछ नायिकाएं सावन के चक्कर में पतिदेव की नौकरी को दो टकियों की बताकर उनका मनोबल गिराने में लगी हैं ।

सावन के शुरूआत में बादलों ने झमाझम बारिश की तो शहर हाय हाय करने लगे । नई बनी सड़कों का चरित्र उजागर होने लगा । सड़कें तालाब का स्वरूप ग्रहण करने लग गईं । जलभराव से लोगों का आवागमन अवरूद्ध होने लगा । कागज पर नालों की हो चुकी सफाई से बरसात होने पर उनके उफनाने से नालों का कैरेक्टर चुल्लू भर पानी में डूब मरने को तरसने लगा। बादलों को इन दिनों बड़े असमंजस का सामना करना पड़ रहा है। बड़े पशोपेश में हैं बेचारे ! अगर न बरसें तो लोगों के ताने सुनने को मिलते हैं । अगर बरस जाते हैं तो तमाम चीजों की कलई खुलने का डर बना रहता है । बेचारे ! बरसें तो मुसीबत ! न बरसें तो मुसीबत ! आजकल वे भी मनमानी करने से बाज नहीं आ रहे। रह रह कर बरसात होने का माहौल बनाते हैं फिर डोरी डंडा लेकर आगे बढ़ जाते हैं। जनता आशा भरी निगाहों से टकटकी लगाए देखती रहती है फिर विपक्ष की तरह मन मसोस कर रह जाती है और मौसम विभाग के अगले पूर्वानुमान का इंतजार करने लग जाती है । अंततः, हे बादलों ! सावन चल रहा है। तुम अपना कर्तव्य निर्वहन करो ।.....रिमझिम फुहारें पड़ें तो नीम के पेड़ों पर झूले पड़ें.... कजरी गाई जाए, मेघ मल्हार की महफिलें सजे....खेतों में धान की रोपाई हो.....और शहर के नालों की सफाई की असलियत सामने आए।

दया का भाव

बोध कथा

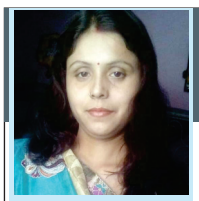

रानी प्रियंका वल्लरी
हरियाणा

एक महिला दिन-रात भक्ति में खोई रहती थी। हर आने-जाने वाले को भक्ति का मर्म बताती। दूसरों की मजबूरी के आशय जानने का प्रयास करती। जहाँ तक संभव हो सकता, उनके दुख का निवारण भी करती। एकदिन अचानक एक व्यक्ति चीखता-चिल्लाता उनके पास पहुँचा। रोते-रोते कहने लगा, 'मैं लूट चुका हूँ! बर्बाद हो चुका! महिला ने पूछा, बात तो बताओ। आखिर हुआ क्या तुम्हारे साथ।'

'मैंने अपना सारा धन उस पर लूटा दिया। मैंने उस पर विश्वास करके अपना निजी सहायक

बनाया। उसके अच्छे- बुरे समय में साथ दिया। उसके कमी को अपनी कमी समझ उसे हर रास्ते से उबारता आया। अब वह मेरा धन लूट कर जाने कहाँ चला गया।' महिला ने उसे शांत करते हुए कहा, 'लो, पहले यह प्रसाद खाओ। फिर आगे की सोचो। तुम्हें कौन धोखा दिया, कौन लूटा यह मत सोचो। सोचो यह जब तुम जन्म लिये तो तुम्हारे पास क्या था ? तुम यहां जो खड़े हो, वह भी शायद उस लुटेरे की ही कृपा हैं। यहां आने वाले कभी जीवन में किसी से धोखा नहीं खाते, नहीं लुटते। प्रभु राम जब वन गमन किये थे तो दशरथ पुत्र बन कर गये। जब लौटे तो मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाए। तुम्हारे हृदय में दया करुणा हैं। तुम सबसे धनवान व्यक्ति हो। तुम्हें कोई क्या लूट सकता।' महिला की बातें सुन उस व्यक्ति ने लम्बी साँसें ली। दया दृष्टि की भाव लेकर वहाँ से चल दिया।

नवाब साहब और 'गधा'

ज्ञानेन्द्र मोहन 'ज्ञान'

लखनऊ के एक नवाब साहब को किसी ने 'गधा' बोल दिया। नवाब साहब को ये बहुत नागवार गुजरा और उन्होंने कोर्ट में केस कर दिया। जज ने गधा बोलने वाले से पूछा तो उसने अपनी गलती मानते हुए माफी माँग ली। जज ने नवाब साहब से कहा: 'नवाब साहब अब तो ये माफी माँग रहा है, आपका क्या कहना है?' इस पर नवाब साहब माफी देने के लिये तैयार हो गये। लेकिन शर्त रखी कि वह आदमी अब कभी किसी नवाब को गधा नहीं बोलेगा। वो आदमी भी मान गया कि अब किसी नवाब को वो गधा नहीं बोलेगा।

जज ने मुजरिम को बरी कर दिया। जाने से पहले उस

आदमी ने जज साहब से पूछा: 'योर हॉनर, मैं नवाब साहब को तो कत्तई गधा नहीं बोलूंगा लेकिन एक बात बताइये कि गधे को तो मैं नवाब साहब बोल सकता हूँ कि नहीं?' जज ने कहा: 'गधे को आप कुछ भी बोलिए, कोर्ट का उससे कोई लेना देना नहीं है।' वो आदमी नवाब साहब की तरफमुड़ा और बोला: अच्छा 'नवाब साहब' चलता हूँ!'

खुशी

हर वक्त का साथ ही,
जीवन का सबसे बड़ा साथ है।
यह एक सुखद और भाव-विह्वल
प्रतीक बनकर, दिल से देती है,
मीठी -मीठी और सुकून का सौगात है।
खुशियां और आनन्द से,
मन को सदा मिलता है,
जीवन अमृत पान का,
एक पारदर्शी आहार है।
समस्त संसार में,
लोग इसलिए कहते हैं इसे,
ईश्वर को सबसे खूबसूरत आभार है।
दूसरों की खुशियां,
मन को तृप्त करें,
यही जिन्दगी की तमन्ना होनी चाहिए।
स्वस्थ मस्तिष्क में,
यही भावना हरपल रहनीं चाहिए।
बस मन-को हर्षित करने के लिए,
मन को जीतना जरूरी है,
यह जिन्दगी को मुठ्ठी में भर लेगी ।
खुशियां और सुकून देने में,
सबसे पहले व आगे खड़ा रहेंगी।
मुस्कुराना सीख लेनी है,
जिन्दगी ज्यादा परेशान नहीं करेंगी।
कुछ देर के लिए मुसीबतें आ सकती है
जरुर, परन्तु ज्यादा देर तक
वो नहीं ठहरेंगी।
खुशी एक जज्बाती संस्कार है,
हमें सम्हलकर इसका लुत्फ उठाना चाहिए।
यह जीवंत आस्था और विश्वास से भरपूर है,
मृदुल संसार में इसके सोहबत में,
रहकर हर पल का मजा लेना चाहिए।

डॉ अशोक, पटना

गज़ल

इक नई तहजीब का आगाज है उर्दू गजल
हुस्न की तारीफका अंदाज है उर्दू गजल
जाने किस किस ने लहू देकर सँवारा है इसे
दौर-ए-हाजिर में मगर नासाज है उर्दू गजल
शाइरो के ख्वाब की तस्वीर बनती है कभी
दास्ताने इश्क में परवाज है उर्दू गजल
दौर-ए-हाजिर की हकीकत भी बयाँ यह कर रही
मीर गालिब से मिला एजाज है उर्दू गजल
हुस्न की गहराइयों में डूबकर देखो जरा
इश्क में लिपटी हुई गुलनाज है उर्दू गजल
नज्म हो या हो रुबाई या कविता कहिये जनाब
शाइरी की सिन्फका शहबाज है उर्दू गजल
मीर गालिब दाग मोमिन जौन राहत ने कहा
हर कलम बोला यही मुमताज है उर्दू गजल
दिल धड़क जाते हैं बस इक हुस्न की अंगड़ाई पर
आज 'आतिश' यह तेरी हमराज है उर्दू गजल

आतिश मुरादाबादी

मैं सफर में हूं

गुजरता जा रहा है
बहुत कुछ
आंखों के सामने से
बदलते जा रहे हैं मौसम
लोगों के तौर-तरीके
शुरू है हवाओं का बहकना
और कैलेण्डर में
महीनों का बदलना,
लग रहा है कि चलना है
काफी दूर
नहीं है शेष गुंजाइश
सभी कुछ समाहित कर लेने की,
कितना छानूँ और फटकूं
किरकिरा तो रहेगा ही
सोच रहा हूं पहुंचे किसी
निष्कर्ष पर,
शायद संभव हो सके
और नहीं भी
भाग रहा है
रफ्तार में सब कुछ
मौसम, हवाएं, रातें,
दिन और बहुत कुछ,
दूर है मेरी पहुंच से
हालांकि दौड़ तो मैं भी रहा हूं
क्योंकि मैं भी हूं सफर में,
उनींदी आँखें, उदास मन,
अनाभिव्यक्त तमाम अनुभूतियां
बनती जा रही हैं बोझ,
फैलता जा रहा है बासीपन
मारता हूं हाथ पैर तलाश में
ताजगी की,
नहीं आता कुछ भी नजर
भागती धूप, सिमटती शाम,
पसरता एकाकीपन,
सोच में बढ़ता बौनापन,
चाह रहा हूं,
अनासक्त परिकल्पनाओं में
महसूस करना स्वयं को, तलाशना
स्वयं को आदमकद परछाइयों में,
हूं इसी उहापोह में निरंतर,
क्योंकि मैं भी हूं सफर में
हां मैं सफर में हूं।

पंकज मिश्रा 'अटल'

शायर की बेवजह मौत पे
हर कोई शामिल होगा
रपट लिखाने से यारो
अब क्या हासिल होगा
मुजरिम को जो ढूँढ ले
वो तो काबिल होगा
नशीली जिसकी आँखें है
वो ही कातिल होगा

मलय चक्रवर्ती

बाल जगत को दुष्प्रभावित करता इंटरनेट

डा. कनक रानी
पूर्व प्राचार्य

ज्ञान को विस्तारित करने की दृष्टि से इंटरनेट एक उत्कृष्ट उपलब्धि है। किंतु सम्प्रति विडम्बना यह है कि आज ज्ञान प्राप्ति का यह उपकरण बच्चों में व्यसन की तरह दिखाई दे रहा है। छोटे-छोटे बच्चे जिनके मानसिक विकास के लिए अभी माता-पिता-अभिभावक की सीख जरूरी है, उनके सम्पर्क में इंटरनेट है। इंटरनेट की दुनियां ने उनकी दिनचर्या ही बदल दी है। मोबाइल हाथ में न होने पर कितने ही बच्चे भोजन में प्रवृत्त नहीं होते, घंटे घंटे भर अपनी रुचि के अनुसार मोबाइल पर आंखें गड़ाए रहते हैं। यही नहीं, माता-पिता द्वारा उनके हाथ से लेने-छीनने पर उनमें बुरी तरह आक्रोश देखा जा सकता है। मोबाइल खरीदकर न दिया जाना उनकी दृष्टि में कोई अन्याय से कम नहीं। भाई- बहन- मित्रों के मध्य मोबाइल का महंगा-सस्ता होना भी असंतोष का आधार है। इस स्थिति में वे हीनभावना से ग्रसित भी दिखाई दे सकते हैं। इंटरनेट में व्यवधान के कारण उनकी चिड़चिड़ाहट को सामान्य रूप से नहीं लिया जा सकता। यह उनकी परिवर्तित-विकृत मन:स्थिति को इंगित कर रहा है।

इंटरनेट का बच्चों पर नकारात्मक प्रभाव परिलक्षित हो रहा है। यह शिक्षा में रुचि को भी कमतर करता दिखाई दे रहा है। पढ़ाई में लगने वाला समय इंटरनेट सर्च करने में लग रहा है, बच्चों में यह प्रवृत्ति चिंतनीय है। सामान्यत: बाल्यकाल में हमउम्र साथियों के साथ खेलने की नैसर्गिक इच्छा बलवती होती है, किंतु आज के दौर में बच्चे इंटरनेट को प्रमुखता दे रहे हैं। खेलों से दूरी बाल मन- मस्तिष्क को एकाकीपन की गंभीर समस्या से ग्रसित कर सकती है। बच्चे इंटरनेट पर निरूद्देष्य समय गंवाते हैं, पारिवारिक/सामाजिक संबंधों को नजरअंदाज करते हैं। स्वभाव में यह परिवर्तन किसी भी दृष्टि से समीचीन नहीं।

कुछ वीडियो ऐसे होते हैं जिनको बीच में छोड़ने पर बच्चे उलझन का अनुभव करते हैं। नकारात्मक वीडियो भी उन्हें आकर्षित करते हुए समस्या बन गए हैं। इस सन्दर्भ में विषेष रूप से ध्यातव्य है कि ऐसे मनोरंजन से मस्तिष्क को कोई पोषण नहीं मिलता। आवश्यकता से अधिक चैटिंग भी समय की व्यर्थता के अतिरिक्त कुछ नहीं। इंटरनेट में समय का दुरूपयोग सुपरिणाम नहीं दे सकता है।

इंटरनेट के कारण बालकों में अनेकानेक समस्याएं पनप रही हैं। सिरदर्द, माइग्रेन जैसी बीमारियों से वे अछूते नहीं हैं। इतना ही नहीं, पीठदर्द, अधिक वजन,

अनिद्रा, सामाजिकता का अभाव, पारिवारिक संबंधों से दूरी, व्यक्तिगत जानकारी में संलिप्तता, हैकिंग बाल जगत की गम्भीर समस्या, हैं। देर- देर तक मोबाइल देखने से दृष्टि का कमजोर होना, असमय आंखों पर चश्मा चढ जाना तो आम बात है। बच्चे गेमिंग, सोशल मीडिया और मनोरंजन के अन्य स्त्रोतों की ओर सहजता से आकर्षित हो जाते हैं, जो उन्मुक्त व्यक्तित्व में अवरोधक हैं। गलत जानकारी भी उन पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है। स्मरणीय है कि मोबाइल पर अनावश्यक खर्च बच्चों सहित परिवार की आर्थिक स्थिति को भी प्रभावित करता है। ब्लू व्हेल चैलेंज आदि हानिप्रद खेलों ने बाल जगत में शारीरिक-मानसिक क्षति की प्रत्यक्ष अनुभूति कराई है।

निस्संदेह, बच्चे निर्माण काल से गुजर रहे हैं। उनके सामने बहिर्मुखी और बहुमुखी व्यक्तित्व के विकास की दिषा होना चाहिए। वे ज्ञान की ओर तो कम, मनोरंजन की ओर अधिक आकृष्ट हो रहे हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि बच्चों की रचनात्मकता-सृजनात्मकता पर भी अनुकूल प्रभाव पड़ता नहीं दिखाई दे रहा। बच्चों में इंटरनेट मनोरंजन नहीं अपितु एक लत की तरह दिखाई दे रहा है। हानिकर होने से इस पर नियंत्रण आवश्यक है। अत: बच्चों पर इंटरनेट का दुष्प्रभाव विमर्ष हेतु विवष कर रहा है।

यह कटु सत्य है कि सम्प्रति इन सबका कोई सुस्पष्ट समाधान दृष्टिगत नहीं हो रहा। प्रथमत: तो वे इंटरनेट के मनोरंजन के अभ्यस्त हो चुके हैं, दूसरे ऑनलाइन पढ़ाई का भी दौर है। इस कारण इससे पूरी तरह दूरी बना, बनाना संभव नहीं। तथापि बालहृदय पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों के संदर्भ में सचेत होना आवश्यक है। उनके भटकते हुए कदमों को सही पथ दिखाना माता-पिता/अभिभावक/शिक्षक का ही दायित्व है। इस विषय में बच्चों की अतिरिक्त देखभाल से सकारात्मक परिणाम दिखाई दे सकते हैं।

इंटरनेट की किस सामग्री का प्रयोग बच्चा कर रहा है, इस पर तीक्ष्ण दृष्टि रखनी चाहिए। इंटरनेट का प्रयोग मुख्यत: अध्ययन-ज्ञानार्जन अथवा स्तरोन्नयन के लिए ही किया जाना उचित है। कुछ उपाय प्रभावी हो सकते हैं, यथा बच्चे की उपयोगी सामग्री में ही संलग्नता बढ़ाई जाए। आउटडोर एक्टिविटी के लिए उत्साहित किया जाए। संगीत- कला जैसी सकारात्मक अभिरूचियां जागृत करने का प्रयास किया जाए। रचनात्मकता को उभारने का प्रयास किया जाए। ज्ञान बढ़ाने वाली/पढ़ाई में रुचि जगाने वाली सामग्री के संदर्भ में प्रेरणा दी जाए। मोबाइल की हानियों से अवगत कराते हुए समय सीमा में इसका उपयोग करने के लिए प्रेरित किया जाए। यदि संभव हो तो बड़े लोगों द्वारा केवल आवष्यक कार्य हेतु इसका समुचित उपयोग किया जाए।

पर्यावरणीय अपघटन

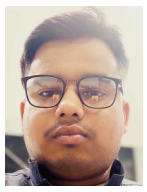

हन्नान
शाहजहांपुर

आपने शायद सुना होगा कि केंचुओं को किसान के मित्र के रूप में जाना जाता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि ये जटिल कार्बनिक पदार्थों का खण्डन करने के साथ-साथ भूमि को भुरभुरा बनाने में भी मदद करते हैं। उसी प्रकार अपघटक जटिल कार्बनिक सामग्री को अकार्बनिक तत्त्वों जैसे कार्बन डाइऑक्साइड जल एवं पोषकों में खण्डित करने में सहायता करते हैं और इस प्रक्रिया को अपघटन कहते हैं पादपों के मृत अवशेष जैसे पत्तियाँ छाल फूल तथा प्राणियों (पशुओं) के मृत अवशेष मलादि सहित अपरद बनाते हैं जोकि अपघटन के लिए कच्चे पदार्थों का काम करते हैं

अपघटन की प्रक्रिया के महत्त्वपूर्ण चरण खण्डन निक्षालन अपचयन ह्यूमस भवन खनिजी भवन हैं अपरदाहारी (जैसे कि केंचुए) अपरद को छोटे छोटे कणों में खण्डित कर देते हैं इस प्रक्रिया को खण्डन कहते हैं निक्षालन प्रक्रिया के अन्तर्गत जल-विलेय अकार्बनिक पोषक भूमि मृदासंस्तर में प्रविष्ट कर जाते हैं और अनुपलब्ध लवण के रूप में अवक्षेपित हो जाते हैं बैक्टीरियल (जीवाणुवीय) एवं कवकीय एन्जाइम्स अपरदों को सरल अकार्बनिक तत्त्वों अपचयन कहते है। तोड़ देते हैं। इस प्रक्रिया को उपर्युक्त अपघटन की समस्त प्रक्रियाएँ अपरद पर समानान्तर रूप से लगातार चलती रहती हैं। ह्यूमीफिक्रेशन और मिनरेलाइजेशन की प्रक्रिया अपघटन के दौरान मृदा में सम्पन्न होती है। ह्यूमीफिक्रेशन के द्वारा ह्यूमस का निर्माण होता है जोकि सूक्ष्मजैविक क्रिया के लिए उच्च प्रतिरोधी होता है और इसका अपघटन बहुत ही धीमी गति से चलता है। स्वभाव (प्रकृति) में कोलॉइडल होने के कारण यह पोषक के भण्डार का काम करता है। ह्यूमस पुन: कुछ सूक्ष्मजीवों द्वारा खण्डित होकर अकार्बनिक पोषक तत्त्व बनाता है इस प्रक्रिया को खनिजीकरण कहते हैं अपघटन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें ऑक्सीजन की आवश्यकता होती है अपघटन की दर जलवायवीय घटकों तथा अपरद के रासायनिक संघटनों द्वारा निर्धारित होती है एक विशिष्ट जलवायवीय परिस्थिति में यदि अपरद काइटिन तथा लिग्निन से भरपूर होता है तब अपघटन दर धीमी होती है यदि अपरद नाइट्रोजन तथा जलविलेय तत्त्वों जैसे चीनी आदि से भरपूर होता है तब यह तेज होती है। ताप एवं मृदा की नमी बहुत ही महत्त्वपूर्ण जलवायवीय घटक हैं जो मृदा के सूक्ष्मजीवों की क्रियाओं द्वारा अपघटन की गति को नियमित करते हैं गर्म एवं आर्द्र पर्यावरण में अपघटन की गति तेज होती है जबकि निम्न ताप एवं अवायवीय अवस्था अपघटन की गति को धीमा करती है जिसके परिणामस्वरूप कार्बनिक पदार्थों का भण्डार जमा हो जाता है।

कविता

हंगामा कुछ चढ़ा चढ़ी भर।
तुमने भी वह खबर पढ़ी भर।
ढोने को शव थे मलबे में,
और खुले में शर्म लढ़ी भर।
भूख, वोट के भंडारे हैं,
खुशियां चावल और कढ़ी भर।
राजनीति सत्ता की प्यासी,
जब देखा तब प्यास बढ़ी भर।

प्रेम ,सरहदें, धोखे, आंसू
फूटी ढपली गई मढ़ी भर।
प्रभुता या मद की मदिरा है,
जहां लगाई सिर्फचढ़ी भर।
कमल गजल होती तो कहता,
बातचीत ही गई गढ़ी भर।

कमल 'मानव'

महिलाओं पर हिंसा होने पर क्यूँ चुप है समाज

पूजा गुप्ता
मिर्जापुर उ.प्र.

हर रोज महिलाओं को थप्पड़ों, लातों, पिटाई, अपमान, धमकियों, यौन शोषण और अनेक अन्य हिंसात्मक घटनाओं का सामना करना पड़ता है। यहां तक कि उनके जीवन साथी या उसके परिवार के सदस्य उनकी हत्या कर देते हैं। इन सबके बावजूद हमें इस प्रकार की हिंसा के परे में अधिक पता नहीं चलता है क्योंकि शोषित व प्रताड़ित महिलाएं इसके बारे में चर्चा करने से घबराती, डरती व झिझकती हैं । अनेक डॉक्टर्स, नर्सें व स्वास्थ्य कर्मचारी हिंसा को एक गंभीर स्वास्थ्य समस्या के रूप में पहचानने में चुक जाते हैं। बेटियां किसी से दबे नहीं बल्कि अन्याय, अत्याचार व जुल्म के खिलाफ बुलंदी के साथ अपनी आवाज उठाएं। वे झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की तरह हिम्मत व बहादुरी के साथ ही सावित्री बाई फुले की तरह शिक्षित व सक्षम बनते हुए समाज को नई दिशा देने में अग्रणी भूमिका निभाएं। यदि बेटियां बहादुर व शिक्षित होंगी तो वे किसी से दबेंगी नहीं और जुल्म सहन नहीं करेंगी। इज्जत का टोकरा केवल बेटियों के सिर पर ही नहीं बेटों के सिर पर भी रखना बेहद जरूरी है। उन्होंने कहा कि अभिभावक बेटियों पर अतिरिक्त दबाव न बनाएं बल्कि उन्हें भी बेटों की तरह आगे बढ़ने के समान अवसर दें। ताकि वे आगे चलकर देश का नाम रोशन कर सकें। आज भी हमारे समाज की सोच बेटियों को लेकर विडम्बनापूर्ण एवं विसंगतिपूर्ण है। बेटी को न पढ़ाना, उन्हें जन्म से पहले मारना, घरेलू हिंसा, दहेज को लेकर बेटियों पर अत्याचार करना हमारे समाज पर एक बदनुमा दाग है। हमें यह समझना जरूरी है कि बेटियां बोझ नहीं होती, बल्कि आपके परिवार, समाज एवं राष्ट्र का एक अहम हिस्सा होती हैं, एक बड़ी ताकत होती है। आज बेटियां चांद तक पहुंच गई है, कोई भी क्षेत्र हो बेटियों ने अपना दमखम दिखा दिया है।

गर्भपात के नाम पर कन्या भ्रूण हत्या कराना अमानवीय कृत्य और जघन्य अपराध है। इससे लिंगानुपात बिगड़ने के साथ-साथ सामाजिक असंतुलन पैदा हो रहा है। महिलाओं को आज भी शारीरिक और मानसिक तौर पर प्रताड़ित किया जाता है। इसके लिए सरकार को सख्त कानून बनाने चाहिए। महिलाओं की सुरक्षा के लिए कानून सख्त

होने चाहिए। दुष्कर्म की घटनाओं को रोकने के लिये सामाजिक और शैक्षिक स्तर पर मुहिम चलाने की जरूरत है। विशेषकर छात्राओं, किशोरियों को इस संबंध में जागरूक किया जाना चाहिए। जिससे वह वर्तमान सामाजिक संकट का मुखर होकर सामना कर सकें। ऐसे अत्याचार का संकट समाज, परिवार से शुरू होता है। यदि परिवार में अच्छे संस्कार मिलें तो ऐसी घटनाओं को रोका जा सकता है। माता- पिता की जिम्मेदारी है कि वे अपने बच्चों को अच्छा परिवेश दें।

आंकड़े बताते हैं कि महिलाएं, पुरुषों से किसी लिहाज से पीछे नहीं हैं। देश में करीब 2.70 करोड़ महिलाएं कमाती हैं और अपने दम पर परिवार चलाती हैं। जहां तक देश में महिलाओं की सुरक्षा का सवाल है, कानून तो हैं, लेकिन उन्हें दरकिनार कर अपराध होते रहे हैं। 2009 में सीबीआई के अनुमान के मुताबिक 30 लाख लड़कियों की तस्करी की गई, जिनमें से 90 फीसदी देह-व्यापार में धकेल दी गईं। नेशनल क्राइम ब्यूरो का कहना है कि 1971 से 2012 के बीच दुष्कर्म के मामलों में 880 फीसदी बढ़ोतरी हुई है। गत तीन वर्षों में कन्या भ्रूण हत्या के 1.2 करोड़ मामले दर्ज हुए हैं, यहां तक कि ग्रामीण इलाकों की 56 फीसदी महिलाएं सुरक्षा कारणों से स्कूल-कॉलेज नहीं जातीं। हर साल 9 हजार महिलाएं दहेज की बलिवेदी पर कुर्बान हो जाती हैं।

दुनियाभर में नारी को समानता का अधिकार दिया गया है, लेकिन अलिखित कायदा यही है कि उसे बचपन से लेकर बुढ़ापे तक जुल्मों का शिकार बनाया जाता है। भारत में तो भ्रूण हत्या, बाल-विवाह, दहेज, सती, देवदासी और विधवाओं के प्रति हेय-दृष्टि जैसी पुरातन परम्पराओं के नाम पर नारी दासता के पन्नों पर हर रोज प्रताड़ना की नई कहानी लिखी जाती है। कानून तो है ही, लेकिन समाज पूरी तरह जागरूक होगा तभी नारी के स्वाभिमान सम्मान की रक्षा होगी। दूसरा पहलू यह है कि साक्षर, स्वावलंबी और आत्म-निर्भर होने पर ही महिला सशक्त होगी। थाने जाने से आज भी डरती हैं महिलाएं। पुलिस का आंकड़ा महज उन मामलों को दर्शाता है। जिन मामलों में रिपोर्ट दर्ज हुई है। सड़क, बाजार, स्कूल, कालेज और सार्वजनिक स्थानों पर मंचलों के उत्पीड़न से परेशान छात्र-छात्राएं शिकायत करने से कतराती हैं। लोक लाज के कारण महिलाएं भी थाने जाने से डरती हैं। कुछ मामले थाना स्तर पर निपटा दिए जाते हैं। अक्सर यही मामले बाद में बड़ी घटना में तब्दील हो जाते हैं। आंकड़े सुधारने के लिए दर्ज नहीं होते मामले। पुलिस रिकार्ड में आंकड़े सुधारने के लिए पुलिस कई मामलों को महज कागजों में ही दफ्न कर देती है। नतीजा, पीड़िताएं अफ्सरों के कार्यालयों के चक्कर काट-काटकर थक जाती हैं। लेकिन उन्हें न्याय तो दूर उनकी रिपोर्ट तक दर्ज नहीं होती। ये विडम्बना है समाज की।

धर्म की गंगा

मीरा जैन, उज्जैन

आज फिर देर से आई, आजकल कोई विशेष काम कर रही है घर पर, आये दिन देर 'मैडम जी ! घर पर तो कोई विशेष काम नहीं कर रही हूं आज मेरा उपवास था इसीलिए मंदिर चली गई' हंसते हुए सुरेखा ने चुटकी ली- 'ओ हो कमली ! आज फिर उपवास पहले तो महीने में चार ही करती थी इस महीने तो तू ने उपवास के सारे रिकॉर्ड ही तोड़ दिये जब पूछो तब उपवास, लगता है इस बार पुण्य का सारा खजाना भगवान तेरे ही नाम लिखने वाले हैं' कमली ने भी सहज भाव से जवाब दिया-मैडम जी ! पाप-पुण्य का तो पता नहीं लेकिन इस माह मेरी ननंद आई हुई है और घर के अन्न का बजट ठीक-ठाक रखना मेरे ही जिम्मे है इसलिए मैं...'।

निकल रहे हैं बच्चों के दांत तो हो जाइये सावधान

शिशु के पहली बार निकलने वाले दांत बेहद कष्टकारी होते हैं। इस दौरान उनके मसूड़ों में जलन, खुजली और बेतहाशा दर्द होता है। ऐसे में उनका रोना किसी भी माता-पिता को अच्छा नहीं लगता है। एक्सपर्ट के मुताबिक, यदि आप पहले से ही कुछ जरूरी काम कर लेंगे तो दर्द को काफी हद तक कम किया जा सकता है। हालांकि दर्द के समय डॉक्टर्स कैल्शियम और विटामिन डी-3 ही लेने की ही सलाह देते हैं। यदि आपके भी बच्चे में दांत निकलने वाले हैं तो एक्सपर्ट के बताएं कुछ तरीकों को जरूर फॉलो करें, ताकि बच्चे को दर्द से राहत मिल सके। आइए गवर्नमेंट मेडिकल कॉलेज कन्नौज के बाल रोग विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. कैलाश सोनी से जानते हैं वे काम, जो बच्चे के दांत निकलने से पहले ही कर लेने चाहिए।

नियमित मालिश करें

शिशु की मालिश करने से हड्डियों में मजबूती तो आती ही है, साथ ही दांत निकलने पर होने वाले दर्द से भी निजात दिलाया जा सकता है। इसके लिए जब भी बच्चे की मालिश करें तो शिशु के पैरों और सिर को हल्के हाथों से जरूर रगड़ें। ऐसा करने से बच्चे के शरीर में ब्लड सर्कुलेशन बेहतर होता है। साथ ही शिशु को दर्द सहन करने की ताकत मिलती है। हालांकि बच्चे में कोई भी परेशानी होने पर डॉक्टर की सलाह जरूरी है।

तरल चीजों का कराएं सेवन

छोटे बच्चों को तरल चीजों का सेवन कराना बेहद फायदेमंद माना जाता है। खासतौर पर दांत निकलते समय। इसके अलावा यदि संभव हो तो मां अपने दूध को निकाल कर फिज रखे, इसके उसी दूध को बोतल में भरकर बच्चे को पिलाए। ऐसा करने से बच्चे के मसूड़े में ठंडक का अहसास होगा, जिससे दर्द में भी राहत मिलेगी।

अच्छी नींद सोने दें

किसी भी शिशु के लिए अच्छी नींद बेहद जरूरी होती है। यदि किसी बच्चे में दांत निकल रहे हैं तो ऐसी स्थिति में उसे भरपूर नींद लेने देना चाहिए। क्योंकि दांत निकलते वक्त बच्चों को दर्द अधिक होता है। इसलिए यदि बच्चा सो रहा है तो उसे जबरन उठाने का प्रयास न करें। बता दें कि, शिशु जितना सोएगा दर्द उतना ही कम होगा।

शहद चटाएं

शिशु को शहद चटाने के कई लाभ होते हैं। इसका सबसे बड़ा लाभ बच्चे के दांत निकलने के दौरान होता है। इसके लिए एक्सपर्ट बच्चे को दिन 2 बार शहद चटाने की सलाह देते हैं। यदि बच्चा शहद नहीं चाट रहा है तो मां दूध पिलाने से पहले शहद को अपने निप्पल पर लगा सकती है, जिससे शिशु दूध के साथ शहद भी खा लेगा। इसके साथ ही शहद से मसूढ़ों की मालिश भी की जा सकती है।

हंसना मना है

एक लड़की का फोन टॉयलेट में गिर गया। टॉयलेट से जिन्न प्रकट हुआ.. जिन्न ने लड़की को गोल्ड का फोन दिया और कहा ये लो तुम्हारा फोन, लड़की ने कुल्हाड़ वाली कहानी सुन रखी थी। इसलिए ईमानदारी का परिचय देते हुए कहा- ये सोने का फोन मेरा नहीं है। जिन्न-पगली रुलाएगी क्या? धो के देख तेरा ही है।

राजू पहाड़ों पर पैराशूट बेच रहा था, ग्राहक- अगर पैराशूट नहीं खुला तो? राजू- तो आपके पूरे पैसे वापिस।

पति - तुम मुझे दो ऐसी बातें बोलो, जिनमें से एक को सुनकर मैं खुश हो जाऊं और दूसरी को सुनकर नाराज हो जाऊं, पत्नी - तुम मेरी जिंदगी हो और दूसरी बात लानत है, ऐसी जिंदगी पर।

गर्लफ्रेंड- मैं अपना पर्स घर पर भूल आई, मुझे 1000 रुपये की जरूरत है। बॉयफ्रेंड- कर दी न छोटी बात, पगली यह ले 10 रुपये। अभी रिक्शा करके घर जा और पर्स ले आ। गर्लफ्रेंड बेहोश।

डॉक्टर - यह सब कैसे हुआ? घायल मरीज- एक लड़की ने मेरी टांग पर गाड़ी चढ़ा दी। डॉक्टर- सड़क से दूर, फुटपाथ पर चलना चाहिए था न घायल मरीज- मैं तो गार्डन में लेटा हुआ था।

कहानी | भूत का भय

उत्तर प्रदेश के एक पीरगढ़ गांव में अब्दुल व उसके कुछ दोस्त रहते थे। एक दिन ऐसे ही उन सभी के बीच भूत की बात छिड़ गई। इस दौरान अब्दुल ने बिना डरे कह दिया कि भूत जैसा कुछ नहीं होता। तभी सभी दोस्तों ने उससे कहा कि ऐसा है तो क्या तुम इस बात को साबित कर सकते हो कि तुम्हें भूत से डर नहीं लगता। उसने कह दिया, हां, बिल्कुल। गांव में इस दौरान ऐसी बातें चल रही थीं कि पास के ही श्मशान घाट में लोगों को भूत नजर आता है। तभी एक दोस्त ने कहा कि ठीक है, तो तुम रात को श्मशान घाट जाओ और वहां जाकर कील गाड़कर आ जाना। फिर सुबह सब मिलकर उस कील को देखकर आएंगे। इतना तय होने के बाद अब्दुल श्मशान घाट के लिए निकल गया। रात काफी काली थी, क्योंकि वो रात आमावस्या की थी। रास्ते में चलते हुए अब्दुल के दिमाग में भूत की बातें घूमने लगी। उसे डर भी लग रहा था, लेकिन दोस्तों के सामने हंसी होगी ऐसा सोचकर वो आगे बढ़ता रहा और श्मशान घाट पहुंच गया। वहां पहुंचते ही अब्दुल ने कील को गाड़ने के लिए जेब से हथौड़ी निकाली और कील को जमीन में धीरे-धीरे गाड़ने लगा। शोर ज्यादा न करने के चक्कर में अब्दुल काफी आराम से कील गाड़ रहा था। कुछ देर बाद उसे लगा कि कोई उसका कुर्ता खींच रहा है। उसका पूरा शरीर ठंडा पड़ गया और वो बेहोश होकर नीचे गिर पड़ा। तभी अब्दुल का पीछा करते हुए श्मशान पहुंचे उसके दोस्तों ने उसे उठाया और गांव लेकर आ गए। काफी देर तक जब अब्दुल को होश नहीं आया, तो उसपर पानी के छींटे मारे। उतने में ही अब्दुल को होश आ गया और उसने बताया कि वो कील श्मशान में गाड़ चुका था, लेकिन तभी कोई उसका कुर्ता खींचने लगा, जिससे वो डर गया। दोस्तों ने अब्दुल को बताया कि कोई उसका कुर्ता नहीं खींच रहा था। अब्दुल ने पूछा, तो क्या हुआ था? तब उसके दोस्तों ने बताया कि जिस कील को जमीन में वो गाड़ रहा था उसी के नीचे कुर्ता भी दब गया था। इसी वजह से उसे लगा कि कोई उसका कुर्ता खींच रहा है। अपने डर की वजह से शर्मिंदा होते हुए अब्दुल ने अपने दोस्तों से माफी मांगी, लेकिन उसके सारे दोस्तों ने मिलकर उसकी हिम्मत की खूब तारीफ की।

कहानी से सीख-आप जितना डरेंगे, आपको डर उतना डराएगा।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा यह सप्ताह

मेष आज काफी चिंता मग्न रहेंगे और इसलिए आपके जीवन में निराशा और सुस्ती रहेगी लेकिन संध्या होते होते आपकी उर्जा वापस लौट आएगी और खर्चों में कमी होगी।

वृषभ आज किए गए कामों से आपको फायदा होगा। घर पर अलग-अलग पकवान का आनंद उठाएंगे। किस्मत का साथ बना रहेगा। बाहर जाने से बचे, बेहतर रहेगा।

मिथुन आज का दिन आपके लिए सफलता के नए द्वार खोल सकता है। सुख के साधनों में वृद्धि होगी। पारिवारिक जीवन से असंतुष्ट भी रह सकते हैं।

कर्क आज आप अपने भाई बहनों के साथ अच्छा समय बिताएंगे। अपने मित्रों को भी फोन पर अपने दिल का हाल सुनाएंगे। इससे आज का दिन बढ़िया बीतेगा।

सिंह आज पारिवारिक जीवन सुखद बना रहेगा। जीवनसाथी का पूरा साथ मिलेगा। अपने व्यक्तित्व के दम पर आप समाज के कुछ लोगों को भी अपने फेवर में कर लेंगे।

कन्या घर में किसी से अनबन हो सकती है, वाणी पर संयम रखें। भाग्य आपके पक्ष में है इसलिए अपने अवसरों का अधिकतम लाभ उठाएं।

तुला आज आप अपने जीवन साथी के साथ बहुत समय बिताएंगे और रिश्ते में आ रही दूरियों को कम करने का प्रयास कर जीवनसाथी को खुशी होगी।

वृश्चिक आज आप खुद को तरोताजा महसूस करेंगे। आप किसी भी तरह आज अपना काम पूरा कर लेंगे। परिवार के लोगों से आपको मदद भी मिलती रहेगी।

धनु ग्रहों की स्थिति कुछ ऐसी है कि आपको मेहनत के मुकाबले कम फल मिलेगा। अच्छी तरह से सोचा गया निर्णय भविष्य के लिए मार्ग प्रशस्त करने में मदद करेगा।

मकर आप आज धर्म-कर्म के कामों में लगेंगे। इससे आपको मानसिक शांति मिलेगी। परिवार के छोटों को साथ लेकर कोई योजना बनाएंगे। नौकरी करने वालों के लिए दिन अच्छा है।

कुम्भ आज पुरे दिन आपका मन प्रसन्न रहेगा। आज आप कोई ऐसा कामकरेंगे, जिससे आपकी तारीफ होगी। किसी भी नए ऑफर के लिए आप तैयार रहेंगे।

मीन आज का दिन उन्नतिकारक और आय-संपत्ति के लिए शुभ हो सकता है। निराशा से बचें। आपके परिवार के किसी सदस्य का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है।

बॉलीवुड | मन की बात

कालकूट की शूटिंग के दौरान फूट-फूटकर रोई थी : श्वेता

श्वेता त्रिपाठी ने बताया कि कालकूट के लिए पहली बार एसिड अटैक का मेकअप करवाते वक्त वह इमोशनल हो गई। मेकअप टेस्ट के दौरान एक्ट्रेस ने एसिड अटैक सर्वाइवर के दर्द को दिल से महसूस कर पायी, जिसके चलते उनकी आंखों में आंसू आ गये। उस पल श्वेता यह सोचने से खुद को नहीं रोक सकी कि जिन लड़कियों पर एसिड अटैक होता है, वह वास्तविक जीवन में किन परेशानियों का सामना करती हैं। उनको हर पल कैसा महसूस होता होगा। घटना के बारे में बात करते हुए, श्वेता कहती हैं। जैसे-जैसे मैंने एक एसिड अटैक सर्वाइवर की भूमिका निभाई है। किरदार और नैरेटिव की गंभीरता हर गुजरते पल के साथ और अधिक बारीकी से समझ आती गई है। मेकअप टेस्ट के दौरान, खुद को सर्वाइवर के रूप में देखकर मैं उनके दर्द को दिल से महसूस कर पाई।

भावनाएं मुझ पर हावी हो गईं, और आंसू खुलकर बहने लगे। यह उनकी कहानियों के साथ न्याय करने और उनके अनुभवों को सामने लाने की हमारी ज़िम्मेदारी की याद दिलाता है। उन्होंने समर्थन और धैर्य के लिए अपनी टीम को धन्यवाद दिया। श्वेता ने आगे कहा, मैं पूरी टीम के अटूट धैर्य, समर्थन और मुझ पर विश्वास के लिए उनकी दिल से सराहना करना चाहूंगी। यह आपका समर्पण और मेरी क्षमताओं में विश्वास है जिसने मुझे इस किरदार की गहराई में जानने और उनकी कहानी को जीवंत करने का मौका दिया।

कालकूट जियोसिनेमा पर आने वाली एक क्राइम ड्रामा टीवी सीरीज है। इसमें विजय वर्मा, श्वेता त्रिपाठी, सीमा बिस्वास, यशपाल शर्मा, गोपाल दत्त और सुजाना मुखर्जी हैं। यह शो एक प्रेरित पुलिस अधिकारी के जीवन पर केंद्रित है जो एक एसिड हमले के मामले को सुलझाने का प्रयास करते हुए अपने काम और पारिवारिक प्रतिबद्धताओं का मैनेज करता है।

शाहिद के साथ इश्क फरमाती नजर आएंगी रश्मिका मंदाना

शाहिद कपूर ने वेब सीरीज फर्जी से अपना धमाकादार ओटीटी डेब्यू कर लिया है। इस सीरीज को दर्शकों का खूब प्यार मिला है। मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो जल्द ही इसका दूसरा सीजन दर्शकों का मनोरंजन करेगा। वहीं शाहिद कपूर अनीस बज्मी के डायरेक्शन में बनने वाली फिल्म में भी दिखेंगे। अनीस-शाहिद की आने वाली इस मूवी को लेकर बड़ा अपडेट सामने आया है।

मीडिया रिपोर्ट की मानें तो, शाहिद कपूर और अनीस बज्मी की आने वाली फिल्म का नाम एक साथ दो दो होने वाला है। टाइटल फिल्म में शाहिद के डबल रोल पर आधारित है। वहीं, इस प्रोजेक्ट में एक्टर के अपोजिट साउथ एक्ट्रेस रश्मिका मंदाना के नजर आ सकती हैं। टाइटल की खास बात यह है कि इसे 1.7.22 के रूप में भी पढ़ सकते है, जिसका कहानी में अहम रोल है।

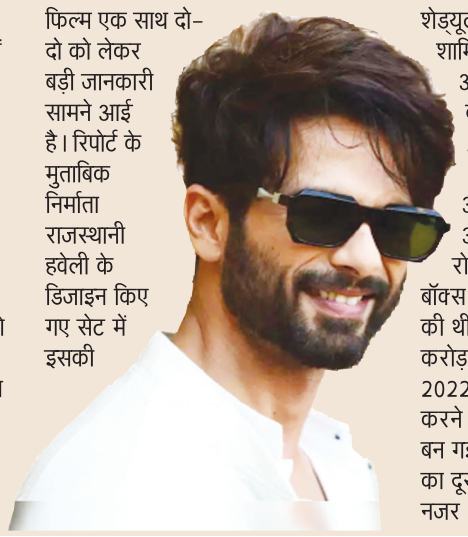

फिल्म एक साथ दो-दो को लेकर बड़ी जानकारी सामने आई है। रिपोर्ट के मुताबिक निर्माता राजस्थानी हवेली के डिजाइन किए गए सेट में इसकी शूटिंग जल्द शुरू करेंगे। रिपोर्ट के मुताबिक, फिल्म का एक हिस्सा राजस्थानी गांव पर बेस्ड है। मानसून के बाद टीम एक व्यापक कार्यक्रम के लिए वहां जाएगी। दूसरे शेड्यूल के बाद रश्मिका यूनिट में शामिल हो जाएंगी।

अनीस बज्मी के डायरेक्शन में बनीं आखिरी फिल्म वर्ष 2022 की हॉरर-कॉमेडी भूल भुलैया 2 थी, जिसमें कार्तिक आर्यन, तब्बू और कियारा आडवाणी जैसे सितारे लीड रोल में दिखे थे। फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर जमकर कमाई की थी। इसने लगभग 266.88 करोड़ की कमाई की, जो वर्ष 2022 की सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्मों में से एक बन गई थी। जल्द ही फिल्म का दूसरा पार्ट नजर आएगा।

बॉलीवुड | मसाला

IFFM 2023: आस्ट्रेलिया में पुरस्कृत होंगे कार्तिक

खुद को भारतीय सिनेमा का राइजिंग ग्लोबल सुपरस्टार कहलाने की अभिनेता कार्तिक आर्यन की ख्वाहिश आखिरकार पूरी होने जा रही है। अगले महीने ऑस्ट्रेलिया के शहर मेलबर्न में होने जा रहे भारतीय फिल्म महोत्सव में ये पुरस्कार उन्हें दिए जाने का एलान सोमवार को कर दिया गया। दिलचस्प बात ये है कि अब से पहले ये पुरस्कार किसी दूसरे कलाकार को इस फिल्म समारोह के आयोजकों ने कभी नहीं दिया है। इस बारे में पूछे जाने पर बताया गया कि पुरस्कार की ये श्रेणी खास इसी साल शुरू हो रही है, कार्यिक आर्यन के लिए।

कार्तिक आर्यन हिंदी सिनेमा की खान सितारों के बाद आई ऋतिक रोशन के दौर की पीढ़ी के बाद की पीढ़ी के पहले सितारे हैं, जिनके आगे पीछे हिंदी सिनेमा नाच रहा है। 'अलु वैकुंठपुरमुलू' की हिंदी रीमेक 'शहजादा' के समय कार्तिक ने अपना रौला पहली बार दिखाया था। 'भूल भुलैया 2' सुपरहिट हो चुकी थी और इसका फायदा उठाने के लिए फिल्म 'अलु वैकुंठपुरमुलू' के हिंदी डबिंग अधिकार रखने वाले एक निर्माता ने इस फिल्म का डब वर्जन रिलीज करने का एलान कर दिया। तब कार्तिक आर्यन ने साफ कह दिया था कि अगर फिल्म का हिंदी डब वर्जन रिलीज हुआ तो वह फिल्म 'शहजादा' की शूटिंग नहीं करेंगे। इसके बाद वही हुआ जैसा कार्तिक चाहते थे।

अजब-गजब | आज तक कोई नहीं जान पाया इसका रहस्य

रात में नीला हो जाता है इस झील का पानी

पूरी दुनिया में रहस्यों की कमी नहीं है, दुनियाभर के वैज्ञानिक भी इन रहस्यों के बारे में आज तक पता नहीं लगा पाए। आज हम आपको एक ऐसे ही रहस्य के बारे में बताने जा रहे हैं जो एक झील में छिपा हुआ है। इस झील का रहस्य ये हैं कि ये झील रात के वक्त किसी नीले रंग के पत्थर की तरह चमकने लगती है। इसीलिए इस झील को दुनिया की सबसे रहस्यमयी झील के नाम से जाना जाता है। दरअसल, हम बात कर रहे हैं इंडोनेशिया की कावाह इजेन नाम की झील के बारे में।

ये झील इंडोनेशिया की सबसे अधिक अम्लीय यानी खारे पानी की झील भी है। इस झील की सबसे बड़ी खासियत ये है कि दिन में तो ये बिल्कुल अन्य झीलों की तरह ही दिखाई देती है लेकिन रात के वक्त इसका पानी बिल्कुल नीले रंग का हो जाता है। तब ऐसा महसूस होता है कि ये कोई नीले रंग का पत्थर हो। बता दें कि इस झील के पानी का तापमान हमेशा 200 डिग्री सेल्सियस तब गर्म रहता है। यानी इसमें अगर कोई जीव गिर जाए तो कुछ ही सेकंड में इसका मांस भाग बन गए उड़ जाएगा। इस झील में सबसे अधिक रहस्यमयी बात इसका रंग है।

रात में इस झील का पानी नीले पत्थर की तरह चमकता है। प्रशांत महासागर के किनारे स्थित इस झील का नाम कावाह इजेन है। इस झील का पानी हमेशा खौलता रहता है। जैसे इसके नीचे किसी ने भट्टी जला रखी हो। इस वजह से झील के आसपास कोई आबादी नहीं रहती है। हालांकि, इस झील की कई बार सैटेलाइट इमेज जारी हो चुकी है, जिसमें रात के समय झील के पानी से नीली-हरी रोशनी निकलती दिखती है। सालों के रिसर्च के बाद वैज्ञानिकों ने इस झील से निकलने वाली रंगीन रोशनी की वजहों का पता नहीं लगाया जा सका।

झील के आसपास कई सक्रिय ज्वालामुखी मौजूद हैं, जिसके कारण झील से हाइड्रोजन क्लोराइड, सल्फ्यूरिक डाइऑक्साइड जैसी कई तरह की गैसें भी निकलती रहती हैं। ये सभी गैसें आपस में मिलकर प्रतिक्रिया करती हैं, जिससे नीला रंग पैदा होता है। बता दें कि कावाह इजेन झील इतनी खतरनाक है कि इसके आसपास वैज्ञानिक भी लंबे समय तक रहने की हिम्मत नहीं कर सकते हैं। एक बार झील की अम्लीयता जांचने के लिए अमेरिकी वैज्ञानिकों की एक टीम ने तेजाब से भरे इस पानी में एलुमीनियम की मोटी चादर को लगभग 20 मिनट के लिए डाला था। इस चादर को निकालने के बाद देखा गया कि चादर की मोटाई पारदर्शी कपड़े जितनी रह गई थी। ज्वालामुखी के असर से अम्लीय झील कावाह इजेन के अलावा एक नदी भी है, जिसे अम्लीयता के कारण काफी घातक माना जाता है। पेरू से जुड़े हुए अमेजन फॉरेस्ट में बहती इस नदी को दुनिया की सबसे बड़ी थर्मल रिवर भी कहा जाता है।

यहां सैलरी मिलती है लाखों-करोड़ों में! फिर भी काम करने नहीं जाता कोई

हम जिस देश की बात कर रहे हैं, वो है ऑस्ट्रेलिया। पिछले दो साल से ये देश सुर्खियों में बना रहता है क्योंकि यहां काम के लिए एक से बढ़कर एक बेहतरीन ऑफर्स दिए जाते हैं। बावजूद इसके इन पदों पर काम करने वाले नहीं मिलते। कुछ महीने पहले यहां एक डॉक्टर की जॉब के लिए करोड़ों की सैलरी और फ्री का घर दिया जा रहा था, फिर भी कोई इसके लिए तैयार नहीं हुआ। ऐसा नहीं है कि सिर्फ पढ़े-लिखे लोगों की नौकरियों में ही करोड़ों ऑफर हो रहे हैं। यहां खादान में काम करने वाले खनिकों और ऑयल मानइनिंग की इंडस्ट्री में भी बढ़िया सैलरी दी जा रही है। इसके लिए 6 महीने से 12 महीने तक का कॉन्ट्रैक्ट होता है और सैलरी यहां भी आराम से 50-60 लाख रुपये होती है। साल 2022 में ऑस्ट्रेलिया की सरकारी कमीशन रिपोर्ट में बताया गया था कि देश में स्किल शॉर्टेज काफी ज्यादा हो चुकी है। साल 2021 से ही ये बढ़ती जा रही है और देश के अंदर हजारों नौकरियां खाली पड़ी हैं। सरकारी मंत्री दूसरे देशों में जाकर लोगों को यहां काम करने का ऑफर दे रही है और इसकी अच्छाइयां गिना रही है। ऑस्ट्रेलिया में हेल्थकेयर विभाग में हजारों नौकरियां खाली हैं। खासतौर पर नर्स, असिस्टेंट और डॉक्टर भी यहां नहीं मिलते। इतना ही नहीं सॉफ्टवेयर और एप्लिकेशन प्रोग्रामर के साथ-साथ कंस्ट्रक्शन मैनेजर यानि ठेकेदारों की भी ज़रूरत यहां है, लेकिन वो भी नहीं मिलते। ऐसे में सरकार की ओर से इमिग्रेशन पॉलिसी में भी बदला किया जा रहा है, ताकि बाहर से लोग यहां आएं। यहां स्किल शॉर्टेज की वजह ये है कि लोग ऑस्ट्रेलिया में पढ़ने तो जाते हैं लेकिन कोई वहां टिकना नहीं चाहता। हालांकि ये देश काफी खूबसूरत है, लेकिन लोग इसे अपना घर नहीं बनाना चाहते। एक सच ये भी है कि स्ट्रिक्ट बॉर्डर रूल्स और वीज़ा रूल की वजह से लाखों लोगों के वीजा एप्लिकेशन लटके रह जाते हैं। हालांकि एक बार कोई यहां पहुंच जाए तो ट्रक ड्राइविंग करके भी 50-60 लाख कमाया जा सकता है, ऐसा यहां रहने वाली एक ट्रक ड्राइवर एशली का कहना है।

लोक पहल, राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक, मुमुक्षु आश्रम, शाहजहॉपुर, प्रधान संपादक अरूण पाराशरी

लोक पहल हिन्दी साप्ताहिक स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक डा. अवनीश कुमार मिश्रा द्वारा शाहजहॉपुर प्रिन्टर्स जज साहब वाली गली, तारीन बहादुरगंज जिला शाहजहॉपुर 242001 से मुद्रित व 160 रोशनगंज लक्ष्मी राईस मिल, शाहजहॉपुर 242001 उ0प्र से प्रकाशित। संपादक–सुयश सिन्हा मो. 9935740205 E-mail : lokpahalspn@gmail.com समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र शाहजहॉपुर होगा।